

॥ श्रीः ॥

वृहवर्ध्न्य भार्त्तण्ड का चतुर्थ अङ्क ।

ग्रहण फल दर्पण ।

अर्थात्

सूर्य चन्द्र के ग्रहण द्वारा जगत् में होनेवाले फेरफार का ज्ञान ।  
भाषा तत्त्व व्याख्या सहित ।

जिसको

प्राचीन ज्योतिः शास्त्रश्रमी, दैवज्ञभूषण, ज्योतिष रत्न आदि  
पण्डित मोटालाल अटलदास व्यासने  
अनेक अलभ्य प्राचीन ग्रन्थों से संग्रह करके  
प्रकाशित करा । पु० व्यावर-राजपूताना ।

5a 5c



प्रथमावृत्ति ]

स १९७० वि

[ प्रति १०००

मूल्य ॥) आठ आना.

इसके सर्वाधिकार प्रकाशक ने स्वाधीन रखे हैं ।

अमदाबाद टंकशाल में युनियन प्रिन्टिंग प्रेस कंपनी लीमिटेडमां

मोतीलाल सामलदासने छापा

# भूमिका ।



सृष्टि विद्या के सिद्धान्तानुसार ग्रहाण्ड के गोल पदार्थों में केवल एक सूर्य ही स्वयं प्रकाशमान है । चन्द्र, मङ्गल, बुध, शुक्र, शनि और पृथिवी आदि अन्य जितने ग्रहादि हैं वे सब केवल उसी एक सूर्य ही के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं । रात्रि के समय सूर्य पृथिवी ही की एकदम आड़ में अर्थात् उसी की दूसरी ओर आ जाने से सूर्य का प्रकाश पृथिवी पर नहीं आ सकता है । किन्तु अन्य ग्रहों तथा तारों पर सूर्य का प्रकाश नियमानुसार कुछन कुछ बनावही रहने से वे पदार्थ प्रायः चमकीले दृष्टि आते हैं । ज्योतिः शास्त्र के मतानुसार ये सब अपनी २ गति से अपनी २ कक्षा में सदैव ही घूमते रहते हैं । इसी गति द्वारा चन्द्रमा घूमते २ जिस समय सूर्य से ठीक दूसरी ओर सामने पृथिवी की छाया के भीतर आ जाता है तब उस पर सूर्य का प्रकाश न पड़ सकने से वह अवस्थानुसार न्युनाधिक प्रकाश हीन हो जाता है और उसका वह अंश अदृश्य हो जाता है उस समय चन्द्रमा को ग्रहण हुआ कहते हैं । इसी प्रकार चन्द्रमा घूमते २ जिस समय बादल के समान सूर्य के न्युनाधिक आड़ा आ जाता है उस समय पृथिवी पर आने वाले सूर्य के उतने प्रकाश को रोक लेता है इसलिये उस समय सूर्य को ग्रहण हुआ कहते हैं । अर्थात् शुक्ल पक्ष की पूर्ण मासी को जब सूर्य और चन्द्रमा के बीच में पृथिवी आ जाती है उस समय यदि रात्रि हो और चन्द्रमा का विम्ब भी पृथिवी की ठीक छाया में आ जावे तो उस समय चन्द्रमा का ग्रहण होता है; परन्तु चन्द्र विम्बका जितना अंश छाया में आ जावेगा उतना ही चन्द्र ग्रहण हुआ दीखेगा । इसी प्रकार कृष्ण पक्ष की अमावस्या को जब सूर्य और पृथिवी के बीच में चन्द्रमा आ जाता है उस समय यदि दिन हो और चन्द्रमा का विम्ब भी सूर्य के ठीक आड़ा आ जावे तो उस समय सूर्य का ग्रहण होता है; परन्तु सूर्य विम्ब का जितना अंश चन्द्रमा से ढँक जावेगा उतना ही सूर्य ग्रहण हुआ दीखेगा । अतः सूर्य चन्द्र को ग्रहण होने का मुख्य कारण तो यही है । परन्तु

श्री ब्रह्मा देव तथा शिवजी के वर प्रदान से 'राहु' नामक ग्रह चन्द्र ग्रहण के समय तो पृथिवी की छाया में और सूर्य ग्रहण के समय चन्द्रमा के विषय में प्रवेश कर जाता है। इसी लिये पुराण आदि धर्म शास्त्रों में ग्रहण का कारण राहु मानकर उस के निमित्त खान दात जप तप हवनादि करने से अक्षय पुण्य होने का विधान सद्भाष दृष्टि से वर्णन करा है।

पदार्थ विद्या के सिद्धान्तानुसार ग्रहण के समय सूर्य चन्द्र और पृथिवी की जो एक प्रकार की एक दूसरे के साथ आकर्षण शक्ति वा विद्युत् शक्ति है उस में कुछ अन्तर पड़ जाता है जिस के कारण जगत् में भी अनेक प्रकार का परिवर्तन हो जाता है परन्तु किस प्रकार के ग्रहण के समय किस प्रकार का परिवर्तन होगा इसका ज्ञान सूर्य साधारण को हो जानें के लिये परोपकारी महर्षियों ने अनेक शास्त्रों में बहुत विस्तार से वर्णन करा है। परन्तु आज कल के निरुद्यमी मनुष्यों के लिये उन अलग्ग ग्रन्थों का एकत्र करना ही महान् दुर्लभ है तो फिर उन महान् विषयों से युक्त अनेक ग्रन्थों में से ग्रहण से सम्बन्ध रखने वाले समग्र विषयों ही को छांटकर एकत्र कर लेना कितना दुर्लभ है! यह बात किसी से भी छिपी हुई नहीं है। इसीलिये मैंने अनेक प्राचीन ग्रन्थों का स्वरूप "बृहद्दर्प्यमार्त्तण्ड" नामक एक महान् विस्तृत ग्रन्थ सरल आर्य भाषा टीका सहित निर्माण किया है। यह ग्रन्थ लोकोपकारार्थ अंक अंक रूपसे प्रकाशित किया जाता है। इन में 'सूर्यतो मद्रवक्र (त्रैलोक्य दीपक)' 'वृष्टि प्रबोध (भारत का वायु शास्त्र)', और 'संक्रान्ति प्रकाश' नामक तीन अंक\* तो प्रथम प्रकाशित किये जा चुके उसी प्रकार यह 'ग्रहण नियन्ध' नामक चौथा अंक भी प्रकाशित करने के लिये तीन भागों

---

\* 'सूर्यतो मद्रवक्र' तथा 'वृष्टि प्रबोध' नामक अंक तो प्रकाशित होत ही हाथोहाथ बिक गये। परन्तु ग्राहकों की माग दिन परदिन बढ़ती ही गई इसलिये वृष्टि प्रबोध को पहिले से भी अधिक बड़ाकर दूसरी बार छपवाया है जो थोड़े ही दिनों में सब ग्राहकों की सेवा में मेची जा चुकेगी। और 'संक्रान्ति प्रकाश' को भी इनी गिनती प्रतिभे शेष हैं वे भी शीघ्र ही बिक जावेंगे।

में बनाया है । इन में ग्रहण होने का मुख्य तथा गौण कारण, उस के जानने के गौण तथा मुख्य उपाय और उस के स्पर्श मध्य-मोक्ष-स्थिति तथा विश्व आदि का यथावत् ज्ञान कुछ भी गणित किये बिना सहज ही केवल दो चार अंक मिलाने ही से हो जाने का सरल विधान तो गणित के सिद्धान्त से 'ग्रहणज्ञान दर्पण' नामक भाग में, ग्रहण के निमित्त से जगत् में होने वाले अनेक प्रकार के शुभाशुभ फलों का विधान फलित के सिद्धान्त से 'ग्रहण फल दर्पण' नामक भाग में और ग्रहण के समय छान-दान, जप-तप, हवन, तथा अनिष्टकारक ग्रहण की शान्ति आदि का विधान धर्म शास्त्रों के सिद्धान्त से 'ग्रहण पुण्य दर्पण' नामक भाग में किया गया है । इन में से यह 'ग्रहण फल दर्पण' नामक भाग प्रथम प्रकाशित किया जाता है इस विषय का ऐसा विस्तृत ग्रन्थ आज तक कहीं भी प्रकाशित नहीं हुआ है । इस को देख कर यदि पाठकों की इच्छा उन 'ग्रहण ज्ञान दर्पण' तथा 'ग्रहण पुण्य दर्पण' नामक भागों के देखने की हुई तो वे दोनों भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित कर दिये जायेंगे । \*

१९७० }  
चैत्र सुदि ७ }

पण्डित भीठालाल व्यास,  
पाली (भारवाड़)



\* हमारे यहाँ की पुस्तकें प्रकाशित होते तो देर लगती है । किन्तु विक्री होत कुछ भी देर नहीं लगती अतः जो लोग मगाने में देरी करते हैं उनके हाथ पुस्तक न आने से हमारी आवृत्ति छपने तक उन्हें पछताना पड़ता है इसी से हमारे यहाँ की पुस्तकों की उपयोगिता पाठक स्वयं ही जान सकते हैं ।

# सूचीपत्र ।



प्रकरण	विषय.	पृष्ठ.	श्लोक.
१	मङ्गलाचरण	१	१
२	ग्रहण निर्णय	२	५
३	ग्रहण होने का मुख्य कारण	३	६
४	ग्रहण स्वामी फल प्रकरण	"	
(१)	स्वामि निर्णय	"	७
(२)	स्वामि ज्ञान	"	८
(३)	ग्रहणा स्वामि फल	४	९
(४)	चन्द्र स्वामि फल	"	१०
(५)	इन्द्र स्वामि फल	"	११
(६)	बुधेर स्वामि फल	"	१२
(७)	शुक्र स्वामि फल	५	१३
(८)	अग्नि स्वामि फल	"	१४
(९)	यम स्वामि फल	"	१५
(१०)	स्वामि रहित पर्व फल	"	१६
५	अयन फल प्रकरण	६	
(१)	उत्तरायण फल...	"	१७
(२)	दक्षिणायन फल...	"	१८
६	मास फल प्रकरण	"	
(१)	कार्तिक मास फल	"	१९
(२)	मृगशिर मास फल	"	२०
(३)	पौष मास फल...	७	२१
(४)	माघ मास फल...	"	२२
(५)	फाल्गुन मास फल	"	२३
(६)	चैत्र मास फल	८	२४
(७)	वैशाख मास फल	"	२५
(८)	ज्येष्ठ मास फल	"	२६

प्रकरण.	विषय.	पृष्ठ.	श्लोक.
(९)	आषाढ़ मास फल ...	...	२७
(१०)	श्रावण मास फल ...	...	२८
(११)	भाद्रपद मास फल ...	...	२९
(१२)	आश्विन मास फल ...	...	३०
(१३)	मास विशेष फल ...	...	३१
(१४)	सूर्य ग्रहण विशेष मास फल ...	१०	३२
(१५)	चन्द्र ग्रहण विशेष मास फल ...	...	३३
(१६)	अधिक मास फल ...	...	३४
७	वार फल प्रकरण ...	...	११
(१)	रविवार फल ...	...	३५
(२)	चन्द्र वार फल ...	...	३६
(३)	मङ्गल वार फल ...	...	३७
(४)	बुध वार फल ...	...	३८
(५)	गुरु वार फल ...	...	३९
(६)	शुक्र वार फल ...	...	४०
(७)	शनि वार फल ...	...	४१
(८)	सूर्य ग्रहण विशेष वार फल ...	...	४२
(९)	चन्द्र ग्रहण विशेष वार फल ...	१३	४०
८	नक्षत्र फल प्रकरण ...	...	१४
(१)	अश्विनी नक्षत्र फल ...	...	५६
(२)	भरणी नक्षत्र फल ...	...	५७
(३)	कृत्तिका नक्षत्र फल ...	...	५८
(४)	रोहिणी नक्षत्र फल ...	...	५९
(५)	मृगशिर नक्षत्र फल ...	...	६०
(६)	आर्द्रा नक्षत्र फल ...	...	६१
(७)	पुनर्वसु नक्षत्र फल ...	...	६२
(८)	पुष्य नक्षत्र फल ...	१६	६३
(९)	अश्लेषा नक्षत्र फल ...	...	६४

प्रकरण.	विषय.	पृष्ठ.	श्लोक.
(१०)	मघा नक्षत्र फल...	...	६५
(११)	पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र	१७	६६
(१२)	उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र फल	...	६७
(१३)	हस्त नक्षत्र फल	...	६८
(१४)	चित्रा नक्षत्र फल	१८	६९
(१५)	स्वाति नक्षत्र फल	...	७०
(१६)	विशाखा नक्षत्र फल	१८	७१
(१७)	अनुराधा नक्षत्र फल	१९	७२
(१८)	ज्येष्ठा नक्षत्र फल	...	७३
(१९)	मूल नक्षत्र फल	...	७४
(२०)	पूर्वाषाढा नक्षत्र फल	२०	७५
(२१)	उत्तराषाढा नक्षत्र फल	...	७६
(२२)	श्रवण नक्षत्र फल	...	७७
(२३)	धनिष्ठा नक्षत्र फल	२१	७८
(२४)	शतभिषा नक्षत्र फल	...	७९
(२५)	पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र फल	...	८०
(२६)	उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र फल	२२	८१
(२७)	रेवती नक्षत्र फल	...	८२
(२८)	नक्षत्र वशा से धान्यादि की तेजी मन्दी.	...	८३
(२९)	सूर्य ग्रहण नक्षत्र फल	२४	९५
९	नक्षत्रानुसार कूर्म चक्रोक्त देश फल प्रकरण.	...	९६
१०	प्राक्षणादि जाति नक्षत्र प्रकरण	२५	९७
११	नक्षत्रानुसार मण्डल फल प्रकरण	२६	१००
(१)	मण्डल ज्ञान	...	१०१
(२)	वायु मण्डल फल	२७	१०३
(३)	अग्नि मण्डल फल	...	१०४
(४)	वरुण मण्डल फल	...	१०५
(५)	महीन्द्र मण्डल फल	...	१०६
(६)	वायु आदि मण्डलों का फल पाक काल	२८	१०७

प्रकरण.	विषय.	पृष्ठ.	श्लोक.
(७)	मण्डलों की शान्ति करने की आवश्यकता	,,	१०८.
१२	योग फल प्रकरण ...	,,	
(१)	विष्कुम्भ योग फल	,,	१०९
(२)	प्रीति योग फल...	,,	११०
(३)	आयुष्मान् योग फल	२९	१११
(४)	सौमान्य योग फल	,,	११२
(५)	शोभन योग फल	,,	११३
(६)	अति गण्ड योग फल	,,	११४
(७)	सुकर्मा योग फल	,,	११५
(८)	धृति योग फल...	३०	११६
(९)	शूल योग फल...	,,	११७
(१०)	गण्ड योग फल...	,,	११८
(११)	वृद्धि योग फल ..	,,	११९
(१२)	भुच योग फल ...	३१	१२०
(१३)	व्याघात योग फल	,,	१२१
(१४)	हर्षण योग फल	,,	१२२
(१५)	घर्ज योग फल ..	,,	१२३
(१६)	सिद्धि योग फल	३२	१२४
(१७)	व्यतिपात योग फल	,,	१२५
(१८)	वरियाण योग फल	,,	१२६
(१९)	परिध योग फल	,,	१२७
(२०)	शिव योग फल	३३	१२८
(२१)	सिद्ध योग फल	,,	१२९
(२२)	साध्य योग फल	,,	१३०
(२३)	शुभ योग फल	,,	१३१
(२४)	शुक्ल योग फल	३४	१३२
(२५)	ब्रह्म योग फल	,,	१३३
(२६)	ऐन्द्र योग फल	,,	१३४
(२७)	वैधृति योग फल	,,	१३५



प्रकरण.	विषय.	पृष्ठ.	श्लोक.
१३	राशि फल प्रकरण ...	...	३५
(१)	मेष राशि फल...	...	१३६
(२)	वृष राशि फल...	...	१३७
(३)	मिथुन राशि फल	...	१३८
(४)	कर्क राशि फल	३६	१३९
(५)	सिंह राशि फल	...	१४०
(६)	कन्या राशि फल	...	१४१
(७)	तुला राशि फल	३७	१४२
(८)	वृश्चिक राशि फल	...	१४३
(९)	धन राशि फल	...	१४४
(१०)	मकर राशि फल	...	१४५
(११)	कुम्भ राशि फल	३८	१४६
(१२)	मीन राशि फल	...	१४७
(१३)	राशि वशसे हर एक वस्तु की तेजी मन्दी	...	१४८
(१४)	नीच राशि स्थित चन्द्र ग्रहण फल ...	३९	१४९
१४	खांश (आकाश भाग) फल प्रकरण	...	...
(१)	खांश निर्णय ...	...	१५०
(२)	प्रथम खांश फल	...	१५१
(३)	द्वितीय खांश फल	४०	१५३
(४)	तृतीय खांश फल	...	१५४
(५)	चतुर्थ खांश फल	...	१५५
(६)	पञ्चम खांश फल	...	१५६
(७)	षष्ठ खांश फल	४१	१६०
(८)	सप्तम खांश फल	...	१६१
(९)	अष्टम खांश से आद्य खांश फल	...	१६२
(१०)	" मध्य खांश फल	...	१६३
(११)	" अन्त्य खांश फल	४२	१६४
(१२)	" सन्ध्या काल फल	...	१६५
(१३)	मोक्ष समय खांश फल ...	...	१६६

प्रकरण.	विषय.	पृष्ठ.	श्लोक.
१५	ग्रस्तोदय, ग्रस्तास्त, व मग्रास फल प्रकरण.	॥	
(१)	सूर्य चन्द्र ग्रस्तोदय फल ...	॥	१६७
(२)	सूर्य ग्रस्तोदय ग्रस्तास्त फल ...	४३	१६९
(३)	चन्द्र ग्रस्तोदय ग्रस्तास्त फल ...	॥	१७०
(४)	सग्रास फल ...	॥	१७१
(५)	सग्रास पाप दृष्टि फल ...	॥	१७२
१६	दिशा फल प्रकरण ...	४४	
(१)	ईशान कोण फल ...	॥	१७३
(२)	पूर्व दिशा फल ...	॥	१७४
(३)	अग्नि कोण फल ...	॥	१७५
(४)	दक्षिण दिशा फल ...	॥	१७६
(५)	नैऋत्य कोण फल ...	४५	१७७
(६)	पश्चिम दिशा फल ...	॥	१७८
(७)	वायव्य कोण फल ..	॥	१७९
(८)	उत्तर दिशा फल ...	॥	१८०
१७	ग्रास फल प्रकरण ...	४६	
(१)	दश प्रकार ग्रास निर्णय ...	॥	१८१
(२)	सव्य ग्रास फल ...	॥	१८२
(३)	अप सव्य ग्रास फल ...	॥	१८३
(४)	लंह ग्रास फल ...	॥	१८४
(५)	ग्रसन ग्रास फल ...	४७	१८५
(६)	निरोध ग्रास फल ...	॥	१८६
(७)	अधमर्दन ग्रास फल ...	॥	१८७
(८)	आरोहण ग्रास फल ...	॥	१८८
(९)	आघात ग्रास फल ...	४८	१८९
(१०)	मध्यतम ग्रास फल ...	॥	१९०
(११)	अन्ततम ग्रास फल ...	॥	१९१
१८	वर्ण फल प्रकरण ...	४९	
(१)	धूम्र वर्ण फल ...	॥	१९२

प्रकरण.	विषय.	पृष्ठ.	श्लोक.
(२)	कृष्ण वर्ण फल...	...	१९३
(३)	रक्त वर्ण फल ...	...	१९४
(४)	कपिल वर्ण फल	...	१९५
(५)	वर्ण वंश से ब्राह्मणादि को अशुभ फल...	...	१९६
(६)	वर्ण वंश विशेष फल	५७	१९७
१९	ग्रह दृष्टि फल प्रकरण	...	५१
(१)	भौम दृष्टि फल	...	२०४
(२)	बुध दृष्टि फल ...	...	२०५
(३)	शुक्र दृष्टि फल...	५२	२०६
(४)	शनि दृष्टि फल...	...	२०७
(५)	गुरु दृष्टि फल ...	...	२०८
२०	ग्रह प्रस्त-फल	...	...
(१)	भौम प्रस्त फल	...	२०९
(२)	बुध प्रस्त फल...	५३	२१०
(३)	गुरु प्रस्त फल ...	...	२११
(४)	शुक्र प्रस्त फल...	...	२१२
(५)	शनि प्रस्त फल...	...	२१३
२१	मोक्ष फल प्रकरण ...	...	५४
(१)	दश प्रकार के मोक्ष निर्णय...	...	२१४
(२)	दक्षिण हनु मोक्ष फल	...	२१५
(३)	वाम हनु मोक्ष फल	...	२१६
(४)	दक्षिण बुद्धी मोक्ष फल	...	२१७
(५)	वाम बुद्धी मोक्ष फल	५५	२१८
(६)	दक्षिण पायु तथा वाम पायु मोक्ष फल...	...	२१९
(७)	संछर्दन मोक्ष फल	...	२२०
(८)	जरण मोक्ष फल	...	२२१
(९)	मध्य विदारण मोक्ष फल ...	५६	२२२
(१०)	अन्त्य विदारणा मोक्ष फल...	...	२२३
(११)	मोक्ष समय का वर्ण फल ...	...	२२४

प्रकरण.	विषय.	पृष्ठ.	श्लोक.
२२	काल फल प्रकरण ...	...	२२५
(१)	एक ग्रहण से आगे होने वाले अन्य ग्रहण का मासानुसार फल ...	...	...
(२)	छः मास से होने का फल ...	५७	२२९
(३)	तेरह महीनों से होने का फल ...	५८	२३०
(४)	अठारह महीनों से होने का फल ...	...	२३२
(५)	चन्द्र मा का ५।११ और सूर्य का १७ महिनों से होने का फल ...	...	२३३
(६)	चन्द्रमा का ५ वर्ष और सूर्य का १२ वर्ष पीछे होने का फल ...	...	२३४
(७)	एक मास में दो ग्रहण होने का फल...	५९	२३५
(८)	एक पक्ष में दो ग्रहण होने का फल...	...	२३६
(९)	चन्द्र ग्रहण के एक पक्ष पीछे सूर्य ग्रहण होने का फल ...	...	२३७
(१०)	सूर्य ग्रहण के एक पक्ष पीछे चन्द्र ग्रहण होने का फल ..	...	२३८
(११)	सूर्य, चन्द्र और फिर सूर्य ग्रहण होने का फल ..	...	२३९
(१२)	अति बेला ग्रहण फल ...	६०	२४०
(१३)	हीन बेला ग्रहण फल ...	...	२४१
(१४)	अति बेला हीन बेला ग्रहण होने में शका ..	...	२४२
(१५)	अति बेला हीन बेला की शका का समाधान	६१	२४३
२३	उत्पात फल प्रकरण...	...	...
(१)	उत्पातों का पृथक् २ अशुभ फल ...	६१	२४४
२४	ग्रहण समय बादल वर्षा आदि ज्ञान प्रकरण...	६२	...
(१)	नवांश वश से वर्षादि निर्णय—	...	२४९
(२)	निमित्तों द्वारा वर्षा आदि निर्णय ...	६३	२५१
२५	मनुष्यादि को जन्म कर्मादि नक्षत्र फल प्रकरण.	...	...
(१)	जन्म कर्मादि नक्षत्र निर्णय...	...	२५२
(२)	जन्म कर्मादि नक्षत्र फल ...	...	२५४
(३)	जन्म नक्षत्र फल ...	६४	२५७

प्रकरण.	विषय.	पृष्ठ.	श्लोक.
(४)	जन्म राशि तथा जन्म लग्न फल	...	२५८
(५)	जन्म राशि कुल...	...	२५९
(६)	जन्मादि द्वादश राशि फल...	६५	२५०
२६	अनिष्ट ग्रहण शान्ति प्रकरण	...	२६१
(१)	साधारण शान्ति	...	२६३
२७	ग्रहण ध्वन फल	६६	२६४

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

## नई शोध । नई शोध ॥ नई शोध ॥

आयुर्वेद में बुद्धि बढ़ाने का उपाय ।

आजकल बिना विद्या के मनुष्यों का जीवन हो ही नहीं सकता और विद्या के लिये बुद्धि की तीव्रता चाहिये इसलिए परोपकारि महर्षियों ने बुद्धि बढ़ाने के अनेक उपाय वैद्यक शास्त्र में वर्णन करे हैं उनकी अत्यन्त आवश्यकता देखकर 'आयुर्वेद पञ्चानन' व्यास पुनर्मचन्द्र तनसुख वैद्य ने बहुत जोर के साथ उन उपायों को एकत्र करके सरल हिन्दी भाषा टीका सहित निर्णय सागर ग्रन्थालय में छपवाकर प्रसिद्ध करी है जिसकी प्रशंसा वैद्यक के सभी समाचार पत्रों ने मुक्त कंठ से की है मूल्य रु. १) बी.पी. से १।) रु. पुस्तक देखने ही योग्य है।

बुद्धि वर्धक बटी ।

यह बटी कई वर्षों के अनुभव से बनार है इसके सेवन से मस्तिष्क के शान्तन्तु पुष्ट हो जाने से स्वभाविक (Natura) बुद्धि बहुत तीव्र हो जाती है जिससे स्मरण शक्ति बढ़ जाने से फिर विद्यार्थियों की परीक्षा में फ़ैल होने का भय नहीं रहता इसके २१ दिन सेवन करने योग्य एक डिब्बी का मूल्य रु. १) बी.पी. से १।) रु.

इस विषय में अधिक हाल जानना हो तो हम से पत्र व्यवहार करें।

पण्डित भीमाल व्यास,

प्यावर-राजपूताना ।

॥ श्रीः ॥

## ग्रहण फल दर्पण ।

ब्रह्मेशविष्णूँश्च महापिसरुघान्  
सन्दांशिनोऽगम्य निमिचशास्त्रान् ।  
श्रीमन्महाराममुनामधेया-  
नन्यान्समग्रौश्च गुरुभामामि ॥ १ ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महादेवजी आदि देवों को; गर्ग, पराशर, नारद आदि महर्षियों को; ब्रह्ममीर, नरपति, चण्डूजी आदि ज्योतिष के आचार्यों को; और श्रीमान् महारामदासजी व्यासजी आदि सम्पूर्णगुरुओं को मन, वचन, और कायासे प्रणाम—नमस्कार करता हूँ कि जिनके अनुग्रह से मेरा यह कार्य निर्विघ्नता से सिद्ध हो ।

बहुफलं जपदानहुतादिके स्मृतिपुराणविदः प्रवदन्ति हि ।

सदुपकारिजने च चमत्कृतिः ग्रहणमिन्द्रिनयोः प्रवदेत्ततः ॥ २ ॥

परम पूजनीय महर्षियोंने जगत् के हितार्थ मूर्य तथा चन्द्रमा के ग्रहण सम्बन्धी सम्पूर्ण प्रकारका ज्ञान तीन भागों में बहुत विस्तार से वर्णन किया है उनमें ग्रहण होने के समय, स्पर्श, मध्य, मोक्ष, स्थिति, शर, सन्मीलन, उन्मीलन, और विश्वे आदि के ज्ञान का निर्णय तो सिद्धान्त आदि गणित के ग्रन्थों में; ग्रहण के समय स्नान, दान, जप, तप हवन और सूतक आदि के विधि निषेध का निर्णय पुराण आदि धर्म शास्त्रों में; और ग्रहण के निमित्त से सम्पूर्ण जगत् में होनेवाले अनेक प्रकारके चमत्कारी शुभाशुभ फलों का निर्णय संहिता आदि फल विधायक ज्योतिष के ग्रन्थों में किया है ।

सारं सारं समुद्धृत्य पूर्वं शास्त्रं कदम्बतः ।

क्रियते सुखबोधाय ग्रहस्य फलदर्पणम् ॥ ३ ॥

ग्रहण से सम्बन्ध रखने वाले उपरोक्त तीनों विषयों का सर्व साधारण को सुख से बोध—ज्ञान हो जाने के लिये मैंने अनेक प्रकारके प्राचीन ग्रन्थों में से सारका भी परम सार रूप संग्रह एकत्र करके फिर ग्रहण जानने की गणित तथा धर्म शास्त्रों के विधान तो 'ग्रहण निबन्ध' नामक ग्रन्थमें किया है और फलिन् सम्बन्धी सम्पूर्ण प्रकारका विधान इस 'ग्रहण फल दर्पण' नामक ग्रन्थ में करता हूँ।

भारद्वाजकुलारविन्दतरणिर्माध्यान्दिनीयो द्विजो

नानाशास्त्रविचार मग्नहृदयो व्यासावटङ्काङ्कितः ।

वास्तव्यो मरुमण्डले सुविदेते पालीपुरे धार्मिको

जात्यापौष्करणो महीधर सुतः श्रीमिष्टलालाभिधः ॥ ४ ॥

मारवाड़ देशस्य जोधपुर राज्यान्तरगत व्यापार के लिये सुप्रसिद्ध 'पाली' नगर में निवास करनेवाला, पुष्करणा ज्ञानीय, भारद्वाज गोत्री, माध्यान्दिनीय शास्त्राध्यायी—शुक्ल यजुर्वेदी, टङ्कशालावटङ्क—व्यामपदाधिकारी. श्रीमान् महीधर शर्मा का पुत्र, ज्योतिः शास्त्र आदि अनेक प्राचीन शास्त्रों के तत्त्व का अन्त करण से विचार करनेमें मग्न रहनेवाला ('प्राचीन ज्योतिःशास्त्रश्रमी, दैवज्ञ भूषण, ज्योतिष रत्न आवृत्ति') में पण्डित मीठालाल व्यास इस ग्रन्थको प्रकाशित करना है।

ग्रहण निर्णय ।

चन्द्रस्य यदिवा भानोः राहुणा सह संगमः ।

उपरागमिति ख्याता तत्रानन्त फलं स्मृतम् ॥ ५ ॥

राहु वा केतु के साथ चन्द्रमा का योग होने से चन्द्र ग्रहण और सूर्य का योग होने से सूर्य ग्रहण होता है उसे पर्व, उपराग, ग्रह वा ग्रहण कहते हैं।

## ग्रहण होने का मुख्य कारण ।

राहुः कुभामण्डलगः शशाङ्कः शशाङ्कग छादयति न विम्बम् ।  
तमोपयः शम्भुवर प्रदानात् सर्वागमानाम विरुद्धमेतत् ॥ ६ ॥

चन्द्रमा का विम्ब पृथिवी की छाया में आ जाने से चन्द्र ग्रहण और सूर्य के आडा आ जाने से सूर्य ग्रहण होता है यही ग्रहण होने का मुख्य कारण है । परन्तु श्री महादेवजी के वरदान से चन्द्र ग्रहण के समय तो पृथिवी की छाया में और सूर्य ग्रहण के समय चन्द्रमा के विम्ब में अन्धकारमय राहु प्रवेश होता है इसी लिये पुराण आदि धर्मशास्त्रों तथा शणित व फलित आदि ज्योति शास्त्रों में ग्रहण होने का कारण राहु माना है । इसका विशेष निर्णय मेरे बनाये हुये “बृहदर्थ्य मार्तण्ड” नामक ग्रन्थ के ‘ग्रहण निबन्ध’ नामक अङ्क में किया गया है ।

## ग्रहण स्वामि फल प्रकरण ।

पथ स्वामि निर्णय—

पण्मासोत्तरवृद्ध्याः पर्वेशाः सप्तदेवताः क्रमसः ।

ब्रह्माशर्षाद्र कौबेरावरुणाग्नियमाश्च विज्ञेयाः ॥ ७ ॥

सृष्टिके प्रारम्भ से ६ । ६ महीनों के क्रम में ब्रह्मा आदि ७ देवता पर्व ( ग्रहण ) के स्वामि होते हैं जैसे ( १ ) से ब्रह्मा, ( २ ) से चन्द्र, ( ३ ) से इन्द्र, ( ४ ) से कुबेर, ( ५ ) से वरुण, ( ६ ) से अग्नि और ( ७ ) से यम ।

पथ स्वामि ज्ञान—

शाकरविगुणं मासैर्यतैरादर्य विभाजितं ॥

तानशेषे ह्येते चाश्वैः शेषे पर्वेश निर्णयः ॥ ८ ॥

विक्रम संवत् में से १२९ हान करने से जो शेष रहे उसे शालीवाहन का शक कहते हैं उस शक को १२ से गुना करके फिर चैत्रादि गणना से ग्रहण के मास तक की संख्या मिला के ४९ का भाग दें फिर जो



शेष रहे उसको ७ का भाग देने से जो शेष रहे उसका स्वामि, ब्रह्मादि क्रम से जाने ।

**ब्रह्मा स्वामि फल—**

पर्वाधिपे ब्रह्माणिसस्य संपत् वृद्धिर्द्विजानांच तथा पशूनाम् ।

क्षेमं प्रजानां धनधर्मवृद्धिर्निरोगतास्याद्विजयो मरार्चाः ॥ ९ ॥

ग्रहण का स्वामि ब्रह्मा हो तो वर्षा श्रेष्ठ, खेनियों की स्मृति, ब्राह्मणों व पशुओं को सुख, जगत् में क्षेम कल्याण आरोग्य आदि शुभ तथा धन व धर्म की वृद्धि और देवताओं की जय होवे ।

**चन्द्र स्वामि फल—**

चंद्रे च पर्वाधिपतौ प्रजानां क्षेमं च विद्वज्जन पीडनं स्यात् ॥

अवर्षणं धान्यमहर्षता च विनाश मायांति तथौषधीनाम् ॥ १० ॥

ग्रहण का स्वामि चन्द्र हो तो प्रजा में क्षेम कल्याण, विद्वानों को पीडा, वर्षा की कमी, धान्य तेज और मम्पर्ण प्रकार की औषधियों का नाश निम से किराना नेत्र होवे ।

**इन्द्र स्वामि फल—**

इन्द्रो यदा पर्वपतिस्तदानीम्परस्परं स्यात्कुटो नृपाणाम् ।

धान्यानि नश्यन्ति शरद्भवानि क्षेमं प्रजानां न भवेत्कदाचित् ॥ ११ ॥

ग्रहण का स्वामि इन्द्र हो तो राजाओं के परस्पर वैर, शरद ऋतु में उत्पन्न होने वाले धान्यों का नाश और जगत् में अक्षेम तथा अकल्याण आदि अशुभ फल होवे ।

**कुबेर स्वामि फल—**

यदा कुबेरो ब्रह्माधिपः स्यात्तदार्थनाशो धनिनां जनानाम् ।

क्षेमं सुभिक्षं च निरामयत्वं लोकाश्च सर्वे भयवर्जिता स्युः ॥ १२ ॥

ग्रहण का स्वामि कुबेर हो तो धनवानों के धन का नाश, जगत् में क्षेम कल्याण, आरोग्य, निर्मयता और सुभिक्ष होवे ।

वरुण स्वामि फल—

जलेश्वरोपर्वपतौ सुमिक्षंप्रजास्तथोपद्रववर्जिताश्च ॥

क्षेमंचसर्वत्रधनप्रवृद्धिः पीडांसमायांति च राजपुत्राः ॥ १३ ॥

ग्रहण का स्वामि वरुण हो तो जगत् में क्षेम कल्याण, धनकी वृद्धि, उपद्रवों का नाश, और सुमिक्ष होवे जिस में प्रजा को आनन्द किन्तु राज पुत्रों को पीडा होवे।

अग्नि स्वामि फल—

पर्वाधिपोग्निः सतुमित्रनामाधनप्रवृद्धित्वभयं क्षितौचः ॥

शुभाचवृष्टिर्नृपतीन्हितस्थान् निरोगतांचापिकरोतिसस्यम् ॥ १४ ॥

ग्रहण का स्वामि अग्नि हो तो वर्षा श्रेष्ठ, स्त्रियों की वृद्धि, धन की प्राप्ति, भय तथा रोगों का नाश और राजाओं का कार्य सिद्ध होवे।

यम स्वामि फल—

यमोयदापर्वपतिस्तदास्याद् वर्षणंभूपभयंमजानाम् ।

अन्नक्षयंचौरभयं पृथिव्यांहुर्भिक्षमेवं मुनिभिः मदिष्टम् ॥ १५ ॥

ग्रहण का स्वामि यम हो तो जगत् में अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, धान्य का नाश, चोरों का उपद्रव और राजा का भय होवे।

स्वामि रहित वर्ष फल—

पर्वेशहीनंग्रहणं यदास्यात्तदामजानाम शुभप्रदं हि ॥

अवृष्टिदंस्तुन्मरकप्रदं च कदापिकालांतरतोभवेत्तत् ॥ १६ ॥

कोई काल में कदाचित् स्वामि के बिना ही ग्रहण होवे अर्थात् ६।६ महिनों का क्रम छोड़कर ९।७।११।१३ आदि महिनों में चाहे जिस समय ग्रहण हो जावे तो जगत् में अनावृष्टि, दुर्भिक्ष और महामारी आदि अशुभ फल होवे।



## अयन फल प्रकरण ।

उत्तरायन फल—

द्विजानो क्षत्रियाणांचगवांच पीडनंभवेत् ॥

धान्यं मर्दधपणमासैः ग्रहणेचोत्तरायणे ॥ १७ ॥

ग्रहण उत्तरायन में हो तो ६ मास तक ब्राह्मण, क्षत्री तथा गायों को पीड़ा और धान्य मँहगा होवे ।

दक्षिणायन फल—

दक्षिणायनमेराहौ वैश्यशूद्र प्रमर्दनम् ॥

महिपेकुंजरेपीडात्रिभिर्मासैर्मर्दयताः ॥ १८ ॥

ग्रहण दक्षिणायन में हो तो ३ मास तक वैश्य, शूद्र तथा भूमियों और हाथियों को पीड़ा तथा मँहगे हो जावें ।



## मास फल प्रकरण ।

कार्तिक मास फल—

काँचक्यामनलोपजीविमगधान् मान्याधिपान् कौशलान्  
कल्मषानथसूरसेनघहितान् कार्शीश्च संतापयेत् ।

हन्याच्चाधुकर्लिंगदेशनृपतिं सामात्यभृत्यं तमो

दृष्टं क्षत्रियतापदं जनयति क्षेमं मुभिक्षान्वितम् ॥ १९ ॥

ग्रहण कार्तिक में होतो सुनार, लुहार, हल्वार्द, भाडभूजे, वा अंज-  
नेर आदि अग्नि से जीविका करने वाले; मगध देश, पूर्व देश, कौशल देश,  
कल्मष देश, सूरसेन देश, काशि देश, व कर्लिंग देश के राजा तथा प्रजा  
को पीड़ा; और धान्यादि वा मात्र सस्ता हो जावे ।

मृगशिर मास फल—

काश्मीरकान् कौशलकामपौद्गान् मृगांश्च हन्यादपरांतकाश्च ॥

ये सोमपास्तांश्च निहन्ति सौम्ये सुष्टोष्टकृत्सोममुभिक्षकृच्च ॥ २० ॥

ग्रहण भिगशिर में हो तो काश्मीर कोशल पोट्ट अपरान्तक—इन देशों में कष्ट, पशुओं का नाश, सोमपान करने वालों को पीड़ा और जगत् में सुवृष्टि सुभिक्ष तथा क्षेम कल्याण होवे ।

पौष मास फल—

पौषे द्विजक्षत्रजनोपगोयः ससैन्धवाख्याः कुकुराविदेहाः ॥  
ध्वंसं व्रजंत्यत्र च मंददृष्टि र्भयं च विद्यादशुभिक्षमुक्तम् ॥ २१ ॥

ग्रहण पौष में हो तो ब्राह्मण तथा क्षत्रियों को पीड़ा, सिन्ध कुकुर विदेह—इन देशों में कष्ट, और जगत् में वर्षा, की, कमी तथा दुर्भिक्ष आदि का भय होवे ।

माघ मास फल—

माघे तु मातृपितृभक्त वशिष्ठगोत्रान्  
स्वाध्यायधर्मनिरतान् करिणस्तुरंगान् ॥  
बंगांगकाशिमनुजांश्च दुनोति राहु-  
र्दृष्टिं च कर्पुकुजनानुमतां करोति ॥ २२ ॥

ग्रहण माघ में हो तो मातापिता की भक्ति करने वाले, वशिष्ठ गोत्री, वेद पाठी व विद्यार्थि तथा धर्मात्माओं को कष्ट; हाथी तथा घोड़ों का नाश; वैग, अंग, काशी, इन देशों में क्लेश और जगत् में वर्षा खेति करने वालों के मन चाही होवे ।

फाल्गुन मास फल—

पीडाकरं फाल्गुनमासिपर्व बंगास्मकावतकमेकलानाम् ।  
नृसङ्ग यस्य भवरांगनानां धनुष्कर क्षत्रतपस्विनां च ॥ २३ ॥

ग्रहण फाल्गुन में हो तो नाचने तथा गाने वालों, श्रेष्ठ स्त्रियों, धनुष बनाने वालों, क्षत्रियों तथा तपस्या करने वालों को पीड़ा; और बंग, अम्बक, आवन्त, मेरुल—इन देशों में क्लेश होवे ।

चैत्र मास फल—

चैत्र्यं तु चित्रकरलेखकमेयशक्तान्  
रूपोपजीवि निगमज्ञहिरण्यपण्यान्  
पौद्गान्ध्रकैकयजनानथकाश्मकांश्च-  
तापस्पृशत्यमरपोत्रविचित्रवर्षा ॥ २४ ॥

ग्रहण चैत्र में हो तो चित्रकार तथा फोटोग्राफर, लेखक, घर बनाने वाले, वेदिया भांड तथा नारककार आदि रूप से जीविका करने वालों को पीड़ा; पौद्गर, आन्ध्रक, कैकेय तथा अस्मक—इन देशों में क्लेश और सोमा तथा व्यापार की अन्य वस्तुओं का भाव तेज हो जावे।

वैशाख मास फल—

वैशाखमासे ग्रहणे विनाशमायांति कार्पासतिलासमुद्राः ॥  
इक्ष्वाकुयौधेयशकाः कर्लिगाः सोपद्रवाः किंतु सुभिक्षमस्मिन् ॥ २५ ॥  
ग्रहण वैशाख में हो तो इक्ष्वाकु, योधय, शक, कर्लिग—इन देशों में उपद्रव; कर्पास रुई सूत कपड़ा, तिल तेल, तथा मुंग का भाव तेज और जगत् में सुभिक्ष होवे।

ज्येष्ठ मास फल—

ज्येष्ठे नरेन्द्रः द्विजराजपत्न्याः सस्यानिवृष्टिश्च महागणश्च ॥  
प्रध्वंशमायांति नराश्च सोम्याः शालैः समेताश्च निपादसंधाः ॥ २६ ॥  
ग्रहण ज्येष्ठ में हो तो ब्राह्मण राजा तथा राज स्त्री, महागण, निपाद तथा सोमपान करने वालों को पीड़ा; और वर्षा की कमी, तथा खेतियों का नाश निम मे धान्य तेज हो जावे।

आषाढ मास फल—

आषाढपर्वत्पुदपानवध नदीमवाहान् फलमूलवार्त्तान् ॥  
गांधारकाश्मीरपुलिंदचीनान् हतान्वदेत् महलवर्षमस्मिन् ॥ २७ ॥  
ग्रहण अषाढ में हो तो तालाब नदि आदि, फल, मूल, कन्धार, काश्मीर, पुलिंद, चीन आदि का नाश और वर्ष सर्वत्र एकमी नहीं होवे।

श्रावण मास फल—

काश्मीरान् सपुलिंदचीनयवनान् हन्यात् कुरुक्षेत्रजान्  
गांधारानपिमध्यदेशसहितान् दष्टो ग्रहश्रावणे ।

कांबोजैकशफाश्रशारदमपि त्यक्त्वा यथोक्तानिम—

नन्यत्र मचुराबहृष्टमनुजैर्द्धार्त्तं करोत्याहताम् ॥ २८ ॥

ग्रहण श्रावण में हो तो काश्मीर, पुलिंद, चीन, यवन देश, कुरु देश, कन्धार, मध्य देश, कांबोज, एकपाद देश—इनका तथा शारद ऋतु में उत्पन्न होने वाले धान्यों का नाश किन्तु उपरोक्त देशों को छोड़ के अन्य देशों में धान्य की वृद्धि तथा मनुष्यों को आनन्द होवे।

भाद्रपद मास फल—

कुलिंगबंगान् मगधान् सुराष्ट्रन्म्लेछान् सुवीरान् दरदाशमकांश्च ॥

स्त्रीणां चगर्भानिशुरा निहंति सुभिक्षकृद्भाद्रपदेभ्युपेतः ॥ २९ ॥

ग्रहण भाद्रपद में हो तो कुलिंग, बंग, मगध, सुराष्ट्र, म्लेछ देश, सुवीर, दर्द, अश्मक, इन देशों को पीड़ा; स्त्रियों के गर्भ नाश और जगत् में सुवृष्टि तथा सुभिक्ष होवे।

आश्विन मास फल—

कांबोजचीनयवनान् सहशिल्पिकृद्भि

षाह्लीर्कसिधुतटवासिजनांश्च हन्यात् ।

आनर्त्तपौद्रभिषजश्च तथा किरातान्

दष्टोसुरोश्वयुजि भूरि सुभिक्षकृच्च ॥ ३० ॥

ग्रहण आश्विन में हो तो कांबोज, चीन, यवन, बाल्हीक, सिन्ध, अनार्त्त, पौद्र किरात—इन देशों में कष्ट, शिल्पी (बढ़ई आदि) तथा बैद्यों को पीड़ा और जगत् में बहुत श्रेष्ठ सुभिक्ष होवे।

मास विशेष का फल—

अश्वयुजमाघकार्तिकभाद्रपदेष्वागतः सुभिक्षकरः ।

रादुरवशेषमासेष्वशुभकरो वृष्टिधान्यानाम् ॥ ३१ ॥

• ग्रहण यदि भाद्रपद, आसोज, कार्तिक वा माघ में हो तो सुभिक्ष तथा धान्य मन्दा और जो मिगशिर, पोष, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आपाद वा श्रावण में हो तो वर्षा तथा धान्य का नाश होवे ।

**सूर्य ग्रहण का विशेष मास फल—**

सूर्य ग्रहण कार्तिक में हो तो सुभिक्ष, मिगशिर में हो तो रस कस तेज, पोष में हो तो धान्य तेज, माघ में हो तो मध्यम फल, फाल्गुन में हो तो धान्य बहुत तेज, चैत्र में हो तो धान्य संग्रह करने से शीघ्र लाभ, वैशाख में हो तो धान्य संग्रह करें, ज्येष्ठ में हो तो धान्य अवश्य संग्रह करें, आपाद में हो तो दुर्भिक्ष राज्यावेग्रह, श्रावण में हो तो धान्य बेचने से लाभ, भाद्रवा में हो तो सुभिक्ष और आसोज में हो तो घृत तेल तेज होवे । ३२॥

**चन्द्र ग्रहण का विशेष मास फल—**

चन्द्र ग्रहण कार्तिक में हो तो समुद्र में विग्रह, मिगशिर में हो तो धान्य संग्रह करने से ७ महिनों से लाभ, पोष में हो तो रस कस तेज, माघ में हो तो रस संग्रह करने से शीघ्र लाभ, फाल्गुन में हो तो आगे रस तेज, चैत्र में हो तो वर्षा काल में दुर्भिक्ष, वैशाख में हो तो मर्व वस्तु तेज, ज्येष्ठ में हो तो सुभिक्ष इसलिये धान्य शीघ्र बेच दें, आपाद में हो तो रस कस वस्तु तेज, श्रावण में हो तो सर्व वस्तु का नाश, भाद्रपद में हो तो धान्य बेचकर रस संग्रह करें और आसोज में हो तो कपाम रुई मूत आदि तेज होवे । ३३ ॥

**अधिक मास फल—**

कदाचिदधिके मासे ग्रहणं चन्द्रसूर्ययोः ।

सर्वगप्त्रभयं भंगः सयं यान्ति मही भुजः ॥ ३४ ॥

ग्रहण अधिक मास में हो तो मर्व राष्ट्र का भंग तथा भय और राजाओं की क्रोधा होवे ।

## वार फल प्रकरण ।

रविवार फल—

अल्पं धान्याल्प मेघाश्च स्वल्पक्षीराश्च घनेवः ।

कलिगदेश पीडा च ग्रहणे रविवासरे ॥ ३५ ॥

ग्रहण रविवार को हो तो वर्षा की कमी, धान्यकी उत्पत्ति अल्प, संवत् साधारण, गायों के दूध थोड़ा, रानाओं में युद्ध, कलिग देश में पीड़ा और घृत तैल के बेच देने से लाभ होवे ।

चन्द्रवार फल—

कर्पूरं मदिराश्चैव विनश्यन्ति वरांगनाः ।

यमुनातट पीडा च दुर्भिक्षं तस्कराद्भयम् ॥ ३६ ॥

ग्रहण चन्द्रवार को हो तो कपूर तथा मद्य का नाश, किसी श्रेष्ठ स्त्री को कट यमुना के किनारे के वेशों में पीड़ा और धान्य तथा तैल के संग्रह करने से लाभ होवे ।

मंगलवार फल—

राजकुंजरपीडा च दुर्भिक्षं तस्कराद्भयम् ।

अवन्ति देशपीडा च मङ्गलग्रहणं यदि ॥ ३७ ॥

ग्रहण मंगलवार को हो तो राज्यहाथी को कट, दुर्भिक्षका भय, चोरों का तथा अग्निका उपद्रव और अवन्ति (मालवा) देशमें पीडा होवे ।

बुधवार फल—

पीत धातु महर्घत्वं सार धान्यं विनश्यति ।

कोशले छत्रभङ्गश्च ग्रहणे बुधवासरे ॥ ३८ ॥

ग्रहण बुधवार को हो तो चावल आदि सार धान्यों का नाश, सोना पीतल आदि धातु तेज, कोशल देश में किसी राजाको पीडा और सुपारी तथा लाल वस्त्र के संग्रह करने से लाभ होवे ।



### गुरुवार फल—

सत्य शौचरतायेच चित्रवस्तु प्रकारकाः ।

पीडयेत्सिन्धु देशं च ग्रहणं गुरुवासरे ॥ ३९ ॥

ग्रहण गुरुवारको हो तो सत्य बोलने वाले, पवित्र रहने वाले, चित्र विचित्र वस्तु बनाने वाले तथा सिंध देश के रहने वाले पीडा भोगे और पीली, लाल व सुगन्धी वस्तु तथा नेल आदि सग्रह करनेमें लाभ होवे ।

### शुक्रवार फल—

राशामन्तः पुरं चैव भृगुकच्छं विनाशयेत् ।

रजसमौक्तिकं वस्त्र ग्रहणं भृगुवासरे ॥ ४० ॥

ग्रहण शुक्रवार को हो तो राज्य के महलों में उपद्रव, भडोंच देश में पीडा किन्तु अन्य देशों में सुख, चादी मोती तथा स्वेन कपड़े का भाव तेज और जगन् में मगलीक उत्सव अधिक होवे ।

### शनिवार फल—

सिन्धुतीरे च सोराष्ट्रं महर्ष्य तस्काराद्भयम् ।

राजमन्त्रि विनाशार्थं गृह्णन् मन्दवासरे ॥ ४१ ॥

ग्रहण शनिवार को हो तो सिंध तथा सोरठ देश में धान्य तेज, चोरो का उपद्रव, राजके मन्त्रियों को कष्ट उग्रार तथा अफीम आदि काली वस्तु तेज और पीले व राते वस्त्र तथा ताबा आदि सग्रह करनेसे २ मास में लाभ होवे ।

### सूर्य ग्रहण विशेष वार फल—

सूर्य ग्रहण रविवार को हो तो गेहू चावल मुंग आदि धान्य तथा गुड का सग्रह करने से दो मास में बहुत लाभ होवे । ४२ ॥

सोमवार को हो तो घृत तिल तेल मुग उडद तथा अफीम आदि काली वस्तु का सग्रह करने से लाभ होवे । ४३ ॥

मंगलवार को हो तो कपास रुई सूत कपडा चादी मोती सुमारी ना-

लेर मजीठ हींगलु घृत खांड गुड़ तांबा मुंगा गेहुं चावल आदि सर्व वस्तु का संग्रह करने से साढ़े चार मास से बहुत लाभ होवे ।४४॥

बुधवार को हो तो ज्वार बाजरी मोठ चने आदि धान्य सुपारी कपास कपड़ा लवंग अफीम आदि संग्रह करने से दो मास पीछे लाभ होवे ।४५॥

गुरुवार को हो तो तिल तेल एरंड अलसी सरसों खारक काले वस्त्र संग्रह करने से चार मास पीछे लाभ होवे ।४६॥

शुक्रवार को हो तो वायु का जोर वर्षा अधिक धान्य भाव साधारण और खेतियों की वृद्धि होवे ।४७॥

शनिवार को हो तो तिल तेल तमाखू काली वस्तु तथा शस्त्र का संग्रह करने से बहुत लाभ होवे ।४८॥

चन्द्र ग्रहण विशेष घात फल—

चन्द्र ग्रहण रविवार को हो तो अफीम और चांदी मन्दी होवे इसलिये पहिलेही से बेच दें ।४९॥

सोमवार को हो तो रुई पहिले से संग्रह करने से २ मास में एक खंडी पर रु. २५) ३०) का लाभ होवे ।५०॥

मंगलवार को हो तो रुपा तथा जसद राई के मेथी आदि के संग्रह करने से ३ मास पीछे लाभ होवे ।५१॥

बुध वार को हो तो कसुंभा मजीठ तथा सोने के संग्रह से लाभ होवे ।५२॥

गुरुवार को हो तो रुई के संग्रह करने से ३ मास में एक खंडी पर रु. २०) २५) का लाभ होवे ।५३॥

शुक्रवार को हो तो, जगत् में आनन्द और रुई मन्दी हो जावेगी उस समय खरीदने से आगे ४ मास पीछे अच्छा लाभ होवे ।५४॥

शनिवार को हो तो अलसी सरसों एरंडी तिल आदि का संग्रह करने से ६ मास पीछे लाभ होवे ।५५॥

## नक्षत्र फल प्रकरण ।

अश्विनी नक्षत्र फल—

अश्वश्च सेनापतिवैद्य सेवकास्तु रंगदत्ता वणिजश्च वारकाः ।  
रूपान्विताश्चाश्वहराः फलानि च प्रयान्ति पीडां ग्रहणे यदाश्विने ॥ ५६ ॥

ग्रहण अश्विनी में हो तो घोड़े, सेनापति, वैद्य, नोकर, घोड़ों का पहिचानने वाले, व्यापारी, रखवाले, स्वरूपवान् घोड़ों को हरने वाले, और नालेर आदी फल—इनको पीड़ा होवे ।

भरणी नक्षत्र फल—

ये बन्ध ताडनवद्या निरता मनुष्याः

क्रूरास्तथा रुधिर मांसभुजो पियेस्युः ।

ये चापि नीचकुलजा अपि सत्त्वहीना

स्तान् पीडयेत्तु पकणान् ग्रहणं भरण्याः ॥ ५७ ॥

ग्रहण भरणी में हो तो बध बन्धन तथा ताडन करने वाले, मांस भक्षी, नीच कुलोत्पन्न, सन्वसे हीन और बने आदि तुष वाले धान्य—इनको पीड़ा होवे ।

रुतिका नक्षत्र फल—

ये सूत्रभाष्य कुशला अपि मन्त्र दत्ता

आकारिका द्विज पुरोहित कुम्भकाराः ।

ये चाग्निहोत्र निपुणा अपि मेघ दत्ता-

स्तान् पीडयेद्ग्रहणकं यदि कृत्तिकाया ॥ ५८ ॥

ग्रहण रुतिका में हो तो सूत्र जानने वाले, भाष्य करने वाले, मन्त्र शास्त्री, खोर्नों के दरोगे, ब्राह्मण, राज्यपुरोहि, कुम्भार, अग्निहोत्री और वृष्टि विद्या जानने वाले—इनको पीड़ा होवे ।

रोहिणी नक्षत्र फल—

वाणिज्यभूष धनिसु व्रतकर्षुकाश्च

तोयान्त शाकटिकगौ वृष शैलमान्याः ।

भोगान्विताश्च घृतखंड वराङ्गनाश्च

पीडां प्रयान्ति यदिरोदिणिभे ग्रहः स्यात् ॥ ५९ ॥

ग्रहण रोहिणी में हो तो व्यापारी, राजा, धनवान्, श्रेष्ठ व्रत धारण करने वाले, खेती करने वाले, जल धान्य, गाड़ीवान्, गाय तथा बैल, पर्वत-वासी, नाना प्रकारके भोग भोगने वाले, धृन, स्वांड और वेश्या—इनको पीडा होवे ।

मृगशिर नक्षत्र फल—

वस्त्राज्व पुष्प फल रत्नविहं गमाश्च

गान्धर्व कामुकमुगन्धि वनेचराश्च ।

येसोमपाश्चहरिणा आपेलेखहारा—

स्तान्पीडयेच्चनटकान् ग्रहणं मृगर्क्षे ॥ ६० ॥

ग्रहण मृगशिर में हो तो वस्त्र, कमल, फल, पुष्प, मोती आदि रत्न, पक्षी, गाने वाले, कामी, मुगन्धी वस्तु, वन में विचरने वाले, सोमपान करने वाले, हरण और लेखक—इनको पीडा होवे ।

आर्द्रा नक्षत्र फल—

येचौर्य शाठ्यवबन्धन भेदकारा

मन्त्राभिचार कुशला परदार सक्ताः ।

वैतालिका नृपतराः कटुकौषधानि

हन्याद्ग्रहोर्कशाशिनो यदि रौद्रभेः स्यात् ॥ ६१ ॥

ग्रहण आर्द्रा में हो तो चोर, सट, बन्धन भेद करने वाले, मन्त्रप्रयोगसे शत्रुओं को दण्ड देने वाले पराई स्त्रियों से स्नेह रखने वाले, वैताल को वश में रखने वाले, नाचने वाले और कड़वी औषधी—इनको पीडा होवे ।

पुनर्वसु नक्षत्र फल—

ये सत्यशौच निरवाः कुशला यशोऽन्विता

रूपान्विताश्च धन धान्य युताश्चशिरदिपनः ॥

सेवायुताश्च वणिजः शुभधान्यमन्त्रिणः

पीडाम्प्रायन्त्यपि च ग्रहणं पुनर्वसौ ॥ ॥ ६२ ॥

ग्रहण पुनर्वसु में हो तो सत्यवादी, पवीत्र रहने वाले, चतुर, यश पा-  
नेवाले स्वरूपवान्, धन धान्यसे युक्त, कारीगर, नोकरी करने वाले, व्या-  
पारी, चावल आदि धान्य और राज्य मन्त्रि—इनको पीड़ा होवे।

पुष्य नक्षत्र फल—

पुष्येतुशालीक्षु वनानि मन्त्रिणो भूपाश्च गोधूम यवाश्च साधवः ॥

यज्ञेष्टिसक्ताः सलिलोपजीविनः पीडांमयांति ग्रहणेर्क सोमयोः ॥ ६३ ॥

ग्रहण पुष्य में हो तो चावल, गुड़ खांड, स्त्री, राज्य मन्त्रि, राजा,  
गेहूं, जव, साधु, यज्ञ करने वाले, और जलसे जीविका करने वाले—इनको  
पीडा होवे।

अश्लेषा नक्षत्र फल—

शिल्पानि पद्मग विषाणिच कंदमूल

कीटोः परस्वहरणाभिरताश्च वैद्याः ।

धान्यानिचैव सतुपानि च नाग वल्गो

नाशं मयान्ति यदि पर्व भुजंगमे स्यात् ॥ ६४ ॥

ग्रहण अश्लेषा में हो तो कारीगर, सर्प—सर्प का विष अफीम, भैंस  
आदि के शींग, कन्द मूल, कीट—रेसम, चोर, वैद्य, तुप वाले सब धान्य  
और नागरवेल के पान—इनको पीडा होवे।

मघा नक्षत्र फल—

पितृपुत्रं यदि भवेद् ग्रहणं तदानीम्

नारीद्विषश्च पितृभक्ति रताश्च शूराः ।

शैलाश्रयाः फलभुजो वणिजश्चकोष्ठाः

पीडांमयान्ति धनधान्य युता रसाश्च ॥ ६५ ॥

ग्रहण मयामें हो तो स्त्रियों से द्वेष रखने वाले, पितृश्वरो के भक्त, शूरवीर, पर्वत पर रहने वाले, फल भक्षण करने वाले, व्यापारी और कोष्ठागार—इनको पीड़ा हेवे ।

पुर्वा फाल्गुनी नक्षत्र फल—

गर्वावेचालि शिल्पिपण्य कुमारिकाश्च

कार्पासतैल लवणान्यति सुन्दराश्च ।

दुर्गाश्चयाश्च फलमासिकयोपिताश्च

माक्फाल्गुनीजनित पर्वणियान्ति पीडाम् ॥ ६६ ॥

ग्रहण पुर्वा फाल्गुनीमें होतो गर्ववाले, शिल्पी, खरीदने बेचनेकी वस्तुएं, कुमारी कन्याएं, कपास रुई सूत कपड़ा, सर्व प्रकारका तेल, सर्व प्रकारका लवण, स्वरूपवान्, किलेमें रहनेवाले, नालेर आदि सम्पूर्ण फल, सहत और स्त्रियो—इनको पीड़ा हेवे ।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र फलम्—

ये शौर्य भार्गवयुता विनयान्विताश्च

पाखंडिदानधुमकर्म रतानराश्च ।

शास्त्रप्रवीण धुमधान्य महा धनाढ्या

स्तान् पीडयेद्ग्रहणमुत्तर फाल्गुनीषु ॥ ६७ ॥

ग्रहण उत्तरा फाल्गुनीमें होतो पराक्रमी, दयालु, विनयवान् पाखंडी, दानिव, शुभ कर्म करनेवाले, शास्त्री, चावल आदि धान्य और श्रीमन्त व धनाढ्य—इनको पीड़ा हेवे ।

इस्त नक्षत्र फल—

तेजो युताश्च वणिजो रयिकुंजराश्च

पण्यानिशिल्पि तुष घान्यगजाधिरोहाः ।

चौराश्च शास्त्रकुशलाः परिपीडिताःस्यु—

ईस्तेयदाग्रहण मिन्द्रिनयोस्तदानी ॥ ६८ ॥

ग्रहण हस्तमें होतो तेजस्वी, व्यापारी, रथीयोधा, हाथी, व्यापारकी वस्तुएँ, कारीगर, चावल चने आदि तुपवाले धान्य, हाथीपर चढ़नेवाले, और पण्डित—इनको पीड़ा होवे ।

चित्रा नक्षत्र फल—

शालाक्य चित्रमणि भूषण रागलेख्यः

गंधादियुक्तिकुशला अपितन्तुवायाः ।

तान्पीडयेद्गणितकोविदराजधान्यां

चित्रारख्यमेवदि भवेद्भ्रह्मणरवीन्दोः ॥ ६९ ॥

ग्रहण चित्रामें होतो शत्रु चिकत्तावाले वैद्य वा सरजन—डाकदर, चित्रकार य कोदोम्राफर, जोंहोरी, रंगरेज, लेखक, अतर बनानेवाले, कपड़ा बुननेवाले, गणितज्ञ और उत्तम धान्य—इनको पीड़ा होवे ।

स्वाति नक्षत्र फल—

धान्यानि मात बहुलानि खगा मृगाश्च

येतापसाश्चलघुसत्त्व तुरंगमाश्च ।

येचापि पण्यकुशला चल सौहृदाश्च

स्वातौग्रहे च वणिजः परिपीडितास्युः ॥ ७० ॥

ग्रहण स्वानिमें होतो मटर चने आदि वायुकारक धान्य, गवादि पशु, मयुरादिपक्षि, तपस्वी, सत्वहीन, घोड़ा, व्यापारमें कुशल. चल नित्त-वाले और व्यापारियों को पीड़ा होवे ।

विशाखा नक्षत्र फल—

आरक्त पुष्प फल शास्त्रि जलानिमुद्राः

कर्पांसमाप चणकाः सुरयाग्निस्तकाः ।

नाशंप्रयांसपिपुरेद्वद्वाह्निपिण्ये

चंद्रार्कयोर्यदिभवेद्भ्रह्मण समग्रः ॥ ७१ ॥

ग्रहण विशाखा में होतो लाल रंगके पुष्प. लाल रंगके फल, लाल

शाखावाले वृक्ष, जल, मुंग, रुई, उड़द, चने, देवता और अग्निसे काम लेनेवाले इनको पीड़ा होवे किन्तु धान्यादि पदार्थ मन्दे हो जावे ।

अनुराधा नक्षत्र फल—

शौर्यान्विताश्च गणनायक साधुगोष्ठी

यानप्रसक्त हृदया अपिसाधवश्च ।

मस्यं शरद्भवमपि प्रशमं प्रयान्ति

मैत्राल्य जो ग्रहण मिन्द्रनथोर्यदास्यात् ॥ ७२ ॥

ग्रहण अनुराधामें होतो पराक्रमी, बहुतसे मनुष्योंके स्वामि, साधु-ओंकी सत्संग करनेवाले, बाहनपर चढ़ने के सौखीन, साधु महात्मा, और सरद ऋतुमें उत्पन्न होनेवाले चावल मक्की ज्वार मुंग तिल आदि धान्य—इनको पीड़ा होवे ।

ज्येष्ठा नक्षत्र फल—

असन्त शौर्यकुलविच्च यशोन्विताश्च

सेनाधिपानृपतयो विजिगीषवाये ।

ताम्रादिकं परधनापहृताश्चयेते

पीडांप्रयान्ति यदि पर्व सुरधिपसं ॥ ७३ ॥

ग्रहण ज्येष्ठामें होतो अधिक पराक्रमी, कुलीन, धनवान्, यशस्वी, सेनापति, राजा, शत्रुओंको जीतनेकी इच्छावाले, तांबा आदि धातु और चौर—इनको पीड़ा होवे ।

मूल नक्षत्र फल—

बीजानि चाति धनयुक्त गणाधिपाश्च

पुष्पौषधानि धिषजः फलमूलवार्ता ।

येचापि मूल फलवर्तिजनाश्चतेषां

पीडाकरं रविशशि ग्रहणं च भूले ॥ ७४ ॥

ग्रहण मूल में हो तो सर्व प्रकार के बीज, अति धनवान्, बहुत से



मनुष्यों में मुख्य, पुष्प, ओषधी, वैद्य, सर्वफल, कन्दमूल, और इन वस्तु-  
ओंसे अजीविका करनेवाले—इनको पीड़ा होवे ।

पूर्वाषाढ नक्षत्र फल—

ये सत्यशौच निरता मृदवो धनादयः

पानीय मार्गगमना जल जीवकाश्च ।

तोयाद्भवानि कुमुमानि फलानि चैव

नश्यन्ति पर्वणि च सेतुकराजलर्से ॥ ७५ ॥

ग्रहण पूर्वाषाढा में होतो सत्यवादी, शौचयुक्त, मुशील, धनादय,  
समुद्र आदि जल शिंचन करनेसे उत्पन्न होनेवाले फल पुष्प और पुल  
बनानेवाले—इनको पीड़ा होवे ।

उत्तराषाढा नक्षत्र फल—

तेजस्विन स्तुरगकुंजर मल्लयोधा

ये स्थावराजगतिषन्त्रिक देवभक्ताः ।

भोगान्विताश्च मनुजाः परिपीडिताःस्युः

क्षेमंशुभिर्भ मिहवैश्वगतोग्रहश्चेत् ॥ ७६ ॥

ग्रहण उत्तराषाढा में हो तो तेजस्वी, घोड़े, हाथी, मल्ल—कुत्ती कर-  
नेवाले, योधा—शूरवीर, स्थावर—वृक्षादि, यन्त्र बनानेवाले, देवनाओंके भक्त,  
नाना प्रकारके भोग भोगनेवाले—इनको पीड़ा किन्तु जगत्में क्षेम कस्याण  
तथा शुभिस होवे ।

श्रवण नक्षत्र फल—

मायाविनिसौद्यम सत्यधर्मा उत्साहिनो भाग वतोक्त धर्माः ।

धान्यं द्विजाकर्मस्येसमर्था स्तान्पीडये चेद्भ्राणंश्रुतौस्यात् ॥ ७७ ॥

ग्रहण श्रवणमें हो तो माया फैलानेवाले, नित्य उद्यम करनेवाले,  
सत्य धर्मि, उत्साही, भागवन पाठी, गोधूमादि धान्य और वेदिक कर्म कर-  
नेवाले ब्राह्मण—इनको पीड़ा होवे ।

धनिष्ठा नक्षत्र फल—

ह्रीवाश्च मानरहिताश्चल सौहृदाश्च ये

स्त्रीद्वेषिणः शमपरा बहुवित्तयुक्ताः ।

ये चापिदान निरताः परिपीडिताःस्युः

श्रौराग्निभिश्च वसु ग्रहणं यदिस्यात् ॥ ७८ ॥

ग्रहण धनिष्ठामें हो तो नपुंसक, मानरहित, चल वित्तवाले, स्त्रियों से द्वेष रखनेवाले, शमपरायण, बहुत वित्तवाले और दानी इनको पीड़ा तथा चोरों का व अग्निका उपद्रव होंगे ।

शतभिषा नक्षत्र फल—

येमत्स्य बंधनिरता अपिपाश हस्ता

जीवाश्च ये जलचरा जलमाहवाश्च ।

पेशोडिका रजकसौकरि शाकुनाश्च .

नाशंभयान्ति वरुणर्क्षगतो ग्रहश्चेत् ॥ ७९ ॥

ग्रहण शतभिषामें हो तो मन्त्री पकड़नेवाले, पाश डालनेवाले, जलचर जन्तु, कमल, घोड़े, कलाल आदि मद्य बनानेवाले, धोबी, सौकरीक और पक्षीयाती—इनको पीड़ा होंगे ।

पूर्वा भाद्रपदा नक्षत्र फल—

कीनाशहिंसं पशुपालक तस्कराश्च

धर्मव्रतैर्विरहिताः शठनीचचेष्टाः ।

ये चापि युद्धकुशला मनुजा विनाशं

पूर्वांशु पर्वयदि भद्रपदामुयान्ति ॥ ८० ॥

ग्रहण पूर्वा भाद्रपदामें हो तो कीनाश, हिंसा करनेवाले, पशु पालनेवाले, चोर अधर्मि, व्रतरहित, सठ, नीच प्रकृतिवाले और युद्ध करनेमें कुशल—इनको पीड़ा होंगे ।

उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र फल—

विमामहा विभव दानरतास्तपोन्विताः

पाखंडिनः ऋतुरताश्रमिणो नरेश्वराः ।

तान् शारधान्य महितान् विनिहन्ति पर्व

चन्द्रार्कयोमवाति भद्रपदोचरासु ॥ ८१ ॥

ग्रहण उत्तरा भाद्रपदामें हो तो ब्राह्मण, अधिक वैभववाले, महा-  
दानी, तपस्वी, पाखंडी, यज्ञ करनेवाले, आश्रमी, राजा, और शार धान्य  
श्रेष्ठ पुरुष—इनको पीड़ा होवे ।

रेवती नक्षत्र फल—

तोयोद्भवानि कुसुमानि फलानि गन्धाः

शंखांबुजानिलवर्णं च सुगन्धि पुष्पम् ।

नौकर्णधार वणिजो मणिमौक्तिकानि

नश्यन्ति पौष्णभगते ग्रहणं रेवतीन्दोः ॥ ८२ ॥

ग्रहण रेवतीमें हो तो जन्मे उत्पन्न होनेवाले फल पुष्प, सुगन्धी  
द्रव्य, शंख, कमल, लवण, सुगन्धीवाले पुष्प, नौन करणधार, व्यापारी  
और मणि तथा मोती—इनको पीड़ा होवे ।

नक्षत्र घटा से धान्यादि की तेजी मन्दी—

अश्विन्यां पीडितायां स्यात् मुद्रादीनां महर्घता ।

भरण्यां श्वेत वस्त्रेभ्यो लाभं मासत्रये भवेत् ॥ ८३ ॥

कृतिकायां हेमरूपा प्रवालमणि मौक्तिकम् ।

सप्रहतिं लाभदायी मासे च नवगे स्मृतम् ॥ ८४ ॥

रोहिण्यां सूत्रकर्पास संग्रहो लाभदायकः ।

दश मासान्तरे मोक्तः सोमवेधा न चेदिह ॥ ८५ ॥

मृगशीर्षेण मंजिष्ठा लाक्षा क्षारः कुमुद्वकम् ।

महर्घं दशमासान्तरे लाभदं ज्येष्ठे मृगशिरा ॥ ८६ ॥

पुतं महर्घमाद्र्यायां लाभदं मासपञ्चके ।

तैलालाभः पुनर्वसौः मास पञ्चकतः परम् ॥ ८७ ॥

पुष्येमासे स्त्रिभिर्लाभो भवेद्गोधूमसंग्रहः ।

आश्लेषायां तु मुद्गेभ्यः मासिः स्यान्मासपञ्चके ॥ ८८ ॥

ग्रहण अभिनी नक्षत्र में हो तो मुंग आदि तेज, भरणीमें हो तो श्वेत कपडा संग्रह करने से ३ महिनों से लाभ, कृत्तिका में हो तो सोना चांदी प्रवाल मोती तथा मणी आदिके संग्रह करने से ९ महिनों के बाद लाभ, रोहिणी में ( सूर्य ग्रहण ) हो तो कपास रुई सूत आदि के संग्रह करने से १ = महिनों के बाद लाभ किन्तु चन्द्रमा के ग्रहण में यह कल नहीं, मृगशिर में हो तो मजीठ लाल सार कसुम्भा आदि के संग्रह करने से १० महिनों के बाद लाभ, आर्द्रा में हो तो घृत के संग्रह करने से ५ मास में लाभ, पुनर्वसु में हो तो तैल के संग्रह करने से ५ महिनों के बाद लाभ, पुष्य में हो तो गेहूं के संग्रह करने से ३ महिनों से लाभ, और अश्लेषा में हो तो मुंग संग्रह करने से ५ महिनों से लाभ होवे।

मघा चतुष्टये चोलाचणकः खलुतुष्टये ।

चित्रायां च युगन्धर्या मासोलाभद्वयान्तरे ॥ ८९ ॥

त्रिपञ्चनवभिर्मासैः स्वाती लाभ स्तथातया ।

विशाखायां कुलित्वेभ्यः पण्मासे लाभ सम्भवः ॥ ९० ॥

राधायां कोद्रवालाभो मासैर्नवभिराप्यते ।

ज्येष्ठायां मुहस्रण्डादेः पञ्चमासे धनोदयः ॥ ९१ ॥

ग्रहण मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी वा हस्त में हो तो चूने तथा चनों के संग्रह से लाभ, चित्रा वा स्वाति में हो तो जवार वा बाजरी के संग्रह से २ महिनों से लाभ, विशाखा में हो तो कुलपी के संग्रह से ६ महिनों से लाभ, अनुराधा में हो तो कोंदो घान्य के संग्रह से ९ महिनों से लाभ और ज्येष्ठा में हो तो गुड़ तथा खांड के संग्रह से ५ महिनों से लाभ होवे।

तन्दुलेभ्यस्तथाभूले पूषायां श्वेतवस्त्रतः ।

उषायां श्रीफलात्पुंग्या सर्वत्र मास पञ्चकम् ॥ ९२ ॥

श्रवणे तुवरीलाभः घनिष्ठार्यां तु माषतः ।

चणकेभ्योति वारुण्यां तेभ्यः पूभानिपीडने ॥ ९३ ॥

लाभस्त्रिमासे निर्दिष्ट उषायां खवणादितः ।

मास षट्काष्ठामदृष्टो रेवत्यां मुद्रमाषतः ॥ ९४ ॥

ग्रहण मूल नक्षत्र में हो तो चावलों के संग्रह से ५ महिनो से लाभ, पूर्वाषाढा में हो तो श्वेत वस्त्रों के संग्रह से ५ महिनो से लाभ, उत्तराषाढा में हो तो नालेर तथा सुपारी के संग्रह से ५ महिनो से लाभ, श्रवण में हो तो तुहर के संग्रह से लाभ, घनिष्ठा में हो तो उड़दों के संग्रह से लाभ, शतभिषा वा पूर्वभाद्रपदा में हो तो चनों के संग्रह से लाभ, उत्तराभाद्र-पदा में हो तो खवण आदि के संग्रह से ३ महिनो से लाभ और रेवती में हो तो मुंग तथा उड़दों के संग्रह करने से ६ महिनो से लाभ होवे ।

सूर्य ग्रहण नक्षत्र फल—

आदित्य ग्रासकाले तु दुर्भिक्षं प्रायसो भवेत् ।

तत्तिथि धिष्णवाच्यानि महर्षाणी भवन्ति हि ॥ ९५ ॥

सूर्य का ग्रहण हो तब प्रायः दुर्भिक्ष होता है और उस समय जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र के अक्षरों के नामवाली वस्तुएं भी महँगी हो जाती है ।



‘नक्षत्रानुसार कूर्म चक्रोक्त देश फल प्रकरण ।

नक्षत्रत्रय वर्गोराशेयाद्यैर्व्यवसितैः नवधा ।

भारतवर्षे मध्यात्प्रागादि विभाजिता देशाः ॥ ९६ ॥

कृत्तिका आदि ३७ नक्षत्रों के ९ विभाग करे फिर इस भारत देश के मध्य से लेकर पूर्वादि क्रम से सम्पूर्ण भूमण्डल के ९ भाग करके कृत्ति-

कादि नक्षत्रों के ९ भाग बांट दे जैसे—रुचिका, रोहिणी, मृगशिर, ये ३ मध्य देशके; आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य ये ३ पूर्व के; अश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी ये ३ अग्निकोण के; उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्राये ३ दक्षिण के; स्वाति, विशाखा, अनुराधा ये ३ नैऋत्यकोण के; ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा ये ३ पश्चिम के; उत्तराषाढा श्रवण, धनिष्ठा ये ३ वायव्यकोणके; शनभिया, पूर्वा भाद्रपदा, उत्तरा भाद्रपदा ये ३ उत्तर के और रेवती, अश्विनी, भरणी ये ३ ईशान कोणके देशोंके है ।

ग्रहण जिस दिशा के नक्षत्र पर हो उस दिशा के देशोंको दुर्भिक्ष युद्ध महामारी चोर अग्नि आदि उपद्रवों की पीड़ा होवे ।

—x—

## ब्राह्मणादि जाति नक्षत्र प्रकरण ।

ब्राह्मणादि जाति नक्षत्र निर्णय—

पूर्वात्रयं सानलमग्रजानां राजान्तु पुष्येण सहोत्तराणि ।  
सपौष्ण्यमैत्रं पितृदैवतं च प्रजापतेर्म च कृषीवलानाम् ॥९७॥  
आदित्य हस्ताभिजिदाश्विनानि वणिक्जनानां प्रवदन्तिभानि ।  
मूलाभिनेत्रानिल वारुणानि भान्युग्रजातेः प्रभाविष्णुतायाः ॥९८॥  
सौम्येन्द्र चित्रावसु दैवतानि सेवाजनाश्वाम्य सुपामतानि ।  
सार्प विशाखा श्रवणा भरण्याश्चाण्डल जातोरभिनिर्दिशन्ति ॥९९॥

रुचिका, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा ये ४ नक्षत्र ब्राह्मणों के; पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा ये ४ क्षत्रियों के; रोहिणी, मघा, अनुराधा, रेवती ये ४ खेती करनेवालों के; अश्विनी, पुनर्वसु, हस्त, अभिजित् ये ४ वैश्यों—ज्याधारियों के; आर्द्रा, स्वाति, मूल,

\* इसका विस्तारपूर्वक निर्णय मेरे प्रकाशित कीये हुये 'सप्तमो भद्र-चक्र ( त्रैलोक्य दीपक )' ग्रन्थके 'कूर्मचक्र प्रकरण' में कीया है ।

शतभिषा ये ४ उग्र जातिवालों के; मृगशिर, चित्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा  
४ सेवा-नोकरी करनेवालों के; और भरणी, अश्लेषा, विशाखा, श्रवण  
४ नक्षत्र चांडाल जाति के हैं ।

ग्रहण जिस जातिके नक्षत्र पर हो उस जाति के मनुष्यों को अनेक  
प्रकार से कष्ट पीड़ा होवे ।



### नक्षत्रानुसार मण्डल फल प्रकरण ।

अत्रापि कोचिज्जगदुर्वशेषं वायव्य हौताशन वारुणेन्द्राः ।

स्युसप्तर्षेभवास्तु वर्गाश्चत्वार एषां च पृथक् फलानि ॥१००॥

जगत् का विशेष शुभाशुभ फल जानने के लिये महर्षियोंने अश्वि-  
न्यादि रेवती पर्यन्त अभिनिवृ सहित २८ नक्षत्रोंमें के ७ । ७ नक्षत्रों  
का (१) वायु, (२) अग्नि, (३) वारुण और (४) माहेन्द्र नामक चार  
मण्डल माने हैं ।

वायु, अग्नि, वारुण, व माहेन्द्र मण्डल नक्षत्र शान—

आर्यमणचित्रादिति मैन्दवाश्वि स्वासोर्कभं चेतिगणोनिलस्याः ।

यान्याजपादाग्नि भतिप्यभाग्य मयाविशाखा हुतभुगणोयमा१०१।

तोयेशाद्विर्बुध्न्यरक्षोम्बुपूषा सार्पेशानां वारुणनीति भानि ।

मैश्वं ब्राह्मणं वैष्णवं वासवेन्द्रो वैश्वं चेन्द्रोयं भवर्गोऽभिजिश्च१०२

अश्विनी, मृगशिर, पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति,  
ये ७ नक्षत्र वायु मण्डल के हैं ।

भरणी, कृत्तिका, पुष्य, मघा, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद  
ये ७ नक्षत्र अग्नि मण्डल के हैं ।

---

§ मण्डलोंका विशेष निर्णय भेर बनाये हुये 'बृहदर्य मासंग' ग्रन्थ  
के 'संक्रान्ति प्रकाश' नामक अंक में कीया गया है ।

आर्द्रा, अश्लेषा, मूल, पूर्वाषाढा, शतभिषा, उत्तरा माद्रपदा, रेवती,  
ये ७ नक्षत्र वारुण मण्डल के हैं ।

रोहिणी, अनुराधा, ज्येष्ठा, उत्तराषाढा, अमिजित, श्रवण, धनिष्ठा,  
ये ७ नक्षत्र माहेन्द्र मण्डल के हैं ।

वायु मण्डल फल—

वायुर्गणे कोपि यदोपसर्गो भवेत्तदानी पवनोतिचण्डः ।

सिक्ताग्रहो वीरहतोरणानां लोके नृपे चापि महानघर्षः ॥१०३॥

ग्रहण के समय वायु मण्डल में का नक्षत्र हो तो प्रचंड वायु का  
वेग अधिक, युद्ध करने वाले योधाओं को कष्ट पीड़ा, और राजा तथा  
प्रजा को दुःख क्लेश होवे।

अग्नि मण्डल फल—

वह्नेर्गणे नेत्ररुजोतिसार वृष्ट्यार्थहानिर्ज्वलनप्रकोपः ।

गावोऽल्पदुग्धास्तरवोऽफला स्युः गर्भप्रपाताश्च नितंबिनीनाम् ॥१०४॥

ग्रहण के समय अग्नि मण्डल में का नक्षत्र हो तो अग्नि का कोप,  
नेत्र तथा अतिसार रोगों का उपद्रव, वर्षा का नाश, गायों के दूध अल्प,  
वृक्षों के फलों की हानी और स्त्रियों के गर्भपात होवे ।

वारुण मण्डल फल—

गावोवहुक्षीर धृताफलाढ्या वृक्षाः प्रजाक्षेमसुभिक्षयुक्ताः ॥

मेघाः प्रभूतांबुमुचो भवन्ति वर्गे जलेशस्य त सोपिवर्गे ॥१०५॥

ग्रहण के समय वारुण मण्डल में का नक्षत्र हो तो वर्षा अधिक, सु-  
भिक्ष की वृद्धि वृक्षों के फल फूल अधिक, गायों के दूध तथा घी की वृद्धि  
प्रजा में आनन्द और राजाओं में शान्ति होवे ।

माहेन्द्र मण्डल फल—

महेन्द्रवर्गे वनितासुसौख्यं प्रजाश्च सर्वे मुदिताभवन्ति ।

निकामवर्षा मघवाघरित्री प्रभूतसस्याधिगतेति विद्यात् ॥१०६॥



ग्रहण के समय माहेन्द्र मण्डल में का नक्षत्र हो तो वर्षासमयानुकूल, खेतियों की वृद्धि, स्त्रियों को सुख, और राजा प्रजा को आनन्द होवे ।

वायु आदि मण्डलों का फल पाक काल—

त्रिमासिकं स्यादाग्नेयं वारुणं पंचमासिकम् ।

माहेन्द्रं चैववायव्यं सप्तरात्रं फलं भवेत् ॥ १०७ ॥

वायु मण्डल का ७ दिनसे, अग्नि मण्डल का ३ मास में, वारुण मण्डल का ५ मास से और माहेन्द्र मण्डल का ७ दिन से शुभाशुभ फल ऊपर लिखे अनुसार होता है ।

मण्डलोंकी शान्ति करणकी आवश्यकता—

आग्नेयी कारयेच्छांति शान्तिं कुर्याच्च वारुणीम् ।

वायव्या शान्तिमिप्पेत माहेन्द्री कारयेदपि ॥ १०८ ॥

वायु, अग्नि, वारुण और माहेन्द्र—इन मण्डलों में से जिस मण्डल में ग्रहण आदि कोईभी उत्पात हो तो उसकी शान्ति कर देने से फिर अशुभ फल का नाश हो जाता है ॥

विष्कुम्भ योग फल—

विष्कुम्भयोगे ग्रहणं रविर्द्वौयं मानवाः शोभनबुद्धियुक्ताः ।

तान् पीडयेद्वाजिगजान् वृषांश्च दुर्गाणि लोके च तदा भयंस्मात् १०९

ग्रहण विष्कुम्भ योग में हो तो श्रेष्ठ बुद्धिवाले, घोड़े, हाथी, बिल इनकी पीड़ा और किले में रहनेवाले लोकों को भय होवे ।

प्रीतियोग फल—

चेत्प्रीतियोगे ग्रहणं तदानीं परस्परं मित्रविरोधकृत्स्मात् ।

भेदं च राज्ञां सहसंत्रिंशश्च वरांगनाभिर्विरह करोति ॥ ११० ॥

ग्रहण प्रीतियोग में हो तो मित्रों के परस्पर वैर, राजाओं और मन्त्रियों में फूट और श्रेष्ठ स्त्रियों में भी कलह होवे ।

**आयुष्मन् योग फल—**

योगे तथायुष्मति चेत् ग्रहः स्यात् पीडातदांनी द्विचतुष्पदांनाम् ।  
योद्धास्तथा ये चिरसंग्रहाश्च तेषां महदेशभयं च विधात् ॥१११॥

ग्रहण आयुष्मान योग में हो तो मनुष्य, पशु, पक्षी आदि को पीड़ा;  
और योवाओं को, बहुत समय से संग्रह करनेवालों तथा देश को  
भय होवे ।

**सौभाग्य योग फल—**

सौभाग्ययोगे ग्रहणं यदा तदा निहंति युनः पुरुषाश्च कामिनः ।  
सौभाग्ययुक्ता वरयोपिताश्च यां सुवत्ससौरभ्यगुणानुलेपनम् ॥११२॥

ग्रहण सौभाग्य योग में हो तो कामी पुरुषों को, सौभाग्य युक्त श्रेष्ठ  
स्त्रियों को पीड़ा और वत्स तथा सुगंधी पदार्थों का नाश होवे ।

**शोभन योग फल—**

योगे रवींदोर्ग्रहणं च शोभने महाक्षितीशांच भुचीन् सुमंत्रिणः ।  
ज्योतिर्विदो हंति च वेदपारमान् अवन्तिदेशे परिपीडनं भवेत् ॥११३॥

ग्रहण शोभन योग में हो तो महाराजा, राज्यमन्त्रि, ज्योतिषी, वेद-  
पाठी और अवन्ति ( मालवा ) देश—इनको पीड़ा होवे ।

**अतिगण्ड योग फल—**

ग्रहो यदि स्यादतिगण्डयोगे तदा युवानः पुरुषाश्च वेश्या ।  
नृपास्त्वमात्याः शुचयो नराश्च काशी तथोपद्रवपीडिता स्युः ॥११४॥

ग्रहण अतिगण्ड योग में हो तो युवान पुरुष, वेश्या, राजा, राज्य-  
मन्त्रि, पवित्र रहनेवाले और काशी देश—इनको पीड़ा होवे ।

**सुकर्मा योग फल—**

सुकर्मयोगे ग्रहणं यदा भवेत् क्षितीशदैवज्ञसुराश्च मागधाः ।  
सुवर्णकाराश्च सुकर्मकारिणः किरातदेशा ह्युपयांति पीडन् ॥११५॥

ग्रहण सुकर्मा योग में हो तो राजा, देवज्ञ, देवता, मघद देशवासी, सुनार, सत्कर्म करनेवाले और किरान देश—इनको पीड़ा होवे ।

धृती योग फल—

योगे धृतौ रविशशिग्रहणं यदा  
सयद्वादित्रगीतकुशलापि च नृत्यकारान् ॥

ये काष्टकर्मकुशलाः परयाचकाश्च

कर्णादि भूषणयुताः परिपीडयेतान् ॥११६॥

ग्रहण धृतीयोग में हो तो गाने बनाने तथा नृत्य करनेवाले, लकड़ी का काम करनेवाले, दूसरों से याचना करनेवाले और कानों में आभूषण पहननेवाले—इनको पीड़ा होवे ।

शूल योग फल—

योगे च शूले ग्रहणे धिनाशमायांति वैद्या जलजंत्रवाहाः ।

महेन्द्रजालप्रवरा नाराये कैवर्त्तकाश्चापि स पूर्वदेशाः ॥११७॥

ग्रहण शूल योग में हो तो वैद्य, जल में यन्त्र चलानेवाले, इन्द्रजाल के खेल करनेवाले, कैवर्त्त देशवासी—इनको पीड़ा होवे ।

गण्ड योग फल—

दृश्येत राहुर्पदि गंडयोगे पीडां तदा युद्धकराः प्रयांति ॥

ये योगिनो मंत्रविदो गजाश्च देशाश्च ये दक्षिणदिक्स्थितास्तो ११८

ग्रहण गण्डयोग में हो तो युद्ध करनेवाले, योगी, मन्त्रवादी, हाथी और दक्षिण देशवासी—इनको पीड़ा होवे ।

वृद्धि योग फल—

ग्रहो रवीर्द्वौ यदि वृद्धियोगे तदा कुलीनान् नृपतीन् प्रपीडयेत् ।

कुटुंबिनो ये च तयोत्कटाश्च कांबोजदेशाधिपतिभिर्हन्ति ॥११९॥

ग्रहण वृद्धि योग में हो तो कुलवार्त्तो, राजा, कुटुंबवाले, उत्कट पुरुष और कांबोज देशवासी—इनको पीड़ा होवे ।

### ध्रुव योग फल—

ध्रुवाख्ययोगेपि पुराणवाचकान् व्यासाभिहन्यादपि देवनायकान् ।  
ये हेममार्गोत्तरगामिनश्च तान् जनान् रविद्वोर्ग्रहणं यदा भवेत् ॥१२०॥

ग्रहण ध्रुव योग में हो तो पुराण पाठी, कथा व्यास, देवताओं के पूजारी और हेमालय की ओर से उत्तरदिशिकी यात्रा करनेवाले—इनको पीड़ा होवे ।

### व्याघात योग फल—

ये मधमांसाभिरताश्च लोलुपा ये तस्करा ये पि च जीवघातकाः ।  
निपीडयेत्तान् गिरिवासिनो जनान् व्याघातयोगे रविशीतगुग्रहः ॥१२१॥

ग्रहण व्याघात योग में हो तो मध पीनेवाले, मांस खानेवाले, स्त्री-लोलुप, चोर, जीवघाती और पर्वतपर रहनेवाले—इनको पीड़ा होवे ।

### हर्षण योग फल—

मिष्टान् पानाभिरताश्च कामिनः सौभाग्ययुक्ताः सुखिनश्च ये जना ।  
निपीडयेत्तान् भृगुकच्छवासिनो योगे यदा हर्षणनामनिग्रहः ॥१२२॥

ग्रहण हर्षण योग में हो तो मिष्ठान खानेवाले, मधुर रस पीनेवाले, कामी, सौभाग्य युक्त, सुखी, और भृगुकच्छ—मडोंच देशवासी—इनको पीड़ा होवे ।

### वज्र योग फल—

ये काष्ठकर्मकुशलाश्च धनुर्दरा  
ये गानकर्मकुशलाः परिपीडयेत्तात् ।  
ये कौशले जनपदे निवसन्ति लोका  
स्तांश्चापि वज्रयुजि चे ग्रहणं रविद्वो ॥१२३॥

ग्रहण वज्र योग में हो तो लकड़ी का काम करनेवाले, धनुष रखनेवाले, गानेवाले और कौशल देशके मनुष्य—इन को पीड़ा होवे ।

सिद्धि योग फल—

ये घातुकर्मकुशलाश्च तपस्विन योगिनः  
कापालिकाश्च तिलका हरमेकलाश्च ।  
चाञ्छन्ति सिद्धिमपि ये परिपीडयेत्तान्  
योगे यदा ग्रहणमिद्वन्द्वयोश्च सिद्धौ ॥ १२४ ॥

ग्रहण सिद्धि योग में हो तो घातु के वरतन बनानेवाले, तपस्वी, योगी, कपाली—कनफटेनाथ, मन्त्रादि की सिद्धि चाहानेवाले और तिलक हर तथा मेकल देश में रहनेवाले—इनको पीड़ा होवे ।

व्यतिपात योग फल—

ये चित्रकारा अपि रंगकार ये पूर्ववृत्तांतकथानकाश्च ।  
कीरातदेशाः परपीडिताः स्युर्ग्रहो यदा स्याद्व्यतिपातयोगे ॥ १२५ ॥

ग्रहण व्यतिपात योग में हो तो चित्रकार, रंगकार, प्राचीन इति-  
हासवेत्ता, तथा किस्से कहानिये कहनेवाले और कीरात देशवासी—इनको  
पीड़ा होवे ।

वरियाण योग फल—

योगे वरीयसि यदि ग्रहणं रवीन्द्रोः  
संपीडयेन्नृपयुता वरयोपिताश्च ।  
ये भोगिनो नरवरा अपि यौवनस्रुता  
स्तान् कौकण जनपदं स्वचिरात्तदानीम् ॥ १२६ ॥

ग्रहण वरियाण योग में हो तो राजा, श्रेष्ठ स्त्री, भोगी पुरुष, उत्तम  
भनूप्य, यौवन अवस्थावाले और कौकण देशवासी—इनको पीड़ा होवे ।

परिघ योग फल—

नन्दाश्च गोपा ऋषयश्च भृसास्तुरंगमा ये वनवासिनश्च ।  
ये जीवद्दिस्तानिरताश्च तेषां पीडा ग्रहेस्यात् परिघारूपयोगे ॥ १२७ ॥

ग्रहण परिघ योग में हो तो नन्द, गोप, ऋषि, नोकर, घोड़ोंवाले, वनवासी, और जीव हिंसा करनेवाले—इनको पीड़ा होवे ।

शिव योग फल—

ये होमपूजानिरताश्च शैवा ये चापि षड्दर्शनवादिनश्च ।

संपीडयेत्तान्नापि मध्यदेशं ग्रहो यदिस्पाच्छिवनाम्नियोगे ॥१२८॥

ग्रहण शिव योग में हो तो होम करनेवाले, देव पूजारी, शिव के भक्त, षड्दर्शनवादी और मध्य देश—इनको पीड़ा होवे ।

सिद्ध योग फल—

धनुर्द्धराश्चैव तपस्विनश्च ये योगिनो भिक्षुकसिद्धसंघाः ।

हन्यावतान् काहरमेकलांश्च तिद्धाख्ययोगे ग्रहणं रवीदोः ॥१२९॥

ग्रहण सिद्ध योग में हो तो धनुष्य रखनेवाले—मेने भील आदि, तपस्वी, योगी भिक्षुक, साधुओं की जमात और काहर तथा मेकल देश—इनको पीड़ा होवे ।

साध्य योग फल—

उपवाशपराश्च साधवः शुचयः सत्यरतावणिग्जनाः ।

स्मृतिवेदाविदश्च बाढवा युजि साध्ये ग्रहणं निहन्ति तान् ॥१३०॥

ग्रहण साध्य योग में हो तो उपवास करनेवाले, साधु, पवीत्र रहनेवाले, सत्यवादि, व्यापारी, स्मृति तथा वेदके जाननेवाले और पण्डित—इनको पीड़ा होवे ।

शुभ योग फल—

योगे शुभे ग्रहणमिद्विनयोर्वदास्यात्

पीडां प्रयांति शुभकर्मकरानरा ये ।

श्रेष्ठाः स्वजातिषु च भर्तृपराश्च नापे

रेवातद्रस्थितजना अपिबोत्तमा ये ॥ १३१ ॥

ग्रहण शुभ योग में हो तो शुभ कर्म करनेवाले, स्वजानिमें में श्रेष्ठ, पतिवृत्ता स्त्रियें, उत्तम पुरुष और नरबदा के किनारे के देश में रहनेवाले मनुष्य—इनको पीड़ा होवे ।

शुक्ल योग फल—

शुक्लास्त्रायोगे ग्रहणं यदा स्यात्कर्पूरशुक्लांबरपुष्पकाराः ।

विनाशमायांति शुभाः स्त्रियश्च धनक्षयश्चाप्यमृतक्षयश्च ॥ १३२॥

ग्रहण शुक्ल योग में हो तो कपूर, श्वेत वस्त्र पुष्पो से जीवीका करनेवाले माली आदि, तथा शुभ स्त्री इनको पीड़ा और जगत् में धन तथा अमृत का क्षय होवे ।

ब्रह्म योग फल—

॥ ये देवार्चनहोमजाप्यनिरता ये स्वक्रियापालकाः

सद्धर्मानुरताश्च बाहववरा ये वेदपारंगमाः ।

तान् सर्वान्परिपीडयेदपि तथा ये लोकमान्याजनाः

सूर्याचन्द्रमसोर्ग्रहो यदि भवेन्नृणां ख्ययोगे तदा ॥ १३३॥

ग्रहण ब्रह्म योग में हो तो देवपूजा में रत, होम करने में आशक्त, जाप्य करनेवाले, स्वक्रिया पालक, सद्धर्मकर्ता, पण्डित, वेदान्ती, और जगत् में माननीय पुरुष—इनको पीड़ा होवे ।

ऐन्द्र योग फल—

महाबलिष्ठाश्च महानरेन्द्रा विनाशमायांति धनुर्द्धराश्च ।

भवंति युद्धानि महातिचैन्द्रे योगे यदा स्याद्भ्राण स्वर्दि ॥ १३४॥

ग्रहण ऐन्द्र योग में हो तो महाबलवान्, महाराजा, धनुष्यधारी योधा—इनको पीड़ा और राजाओं में युद्ध होवे ।

वैधृति योग फल—

व्यापारिणश्च धनधान्यचतुष्पथानि

सर्वाकराश्च सहर्मादनुक्ताः श्रितैश्च ।

नश्यन्ति सागरजलोद्भवभूषणानि ।

चंद्रार्कपर्व यदि वैधृतिनामयोगे ॥ १३५ ॥

ग्रहण वैधृति योग में हो तो व्यापारी, धन, धान्य, चीपाये पशु, सर्व प्रकारकी खाने, तोलसे बिकनेवाली सम्पूर्ण वस्तुएँ और समुद्र के जलसे उत्पन्न होनेवाली वस्तुएँ तथा मोतियों के आभूषण इनको पीड़ा होवे।

## राशि फल प्रकरण ।

मेघ राशि फल—

ये पांचालाः शूरसेनाः कलिङ्गाः कांबोजांध्रा शस्त्रवात्ताकिराताः—  
येषां वृत्तिर्वह्निना मध्यदेशंस्ते पीड्यन्ते मेघराशि ग्रहेण ॥ १३६ ॥

ग्रहण मेघ राशि में हो तो पनाव, शूरसेन—मथुरा, कलिङ्ग, कांबोज, अन्ध्र, किरात, मध्यदेश और शस्त्र से तथा अग्निसे आग्नीविका करनेवाले इनको पीड़ा होवे।

वृष राशि फल—

गोषा पशवो धंगोमिनो मनुजा ये च महन्वमानिनः ।

त पीडामुपयाति भास्करे ग्रस्ते शीतकरे धवावृषे ॥ १३७ ॥

ग्रहण वृष राशि में हो तो गोप, पशु, गोमिन मनुष्य, और बहुत अभिमान वाले—इनको पीड़ा होवे।

मिथुन राशि फल—

भूषाश्च भूपसदृशाः प्रवरांगनाश्च

सुहृन्नाश्च बाह्यैकजना बालिनः कलाज्ञाः ।

मत्स्या तथा जनपदा यमुनानदस्था

पीडां प्रयान्ति मिथुने ग्रहणे रविन्दोः ॥ १३८ ॥



ग्रहण मिथुन राशि में हो तो राजा, राजाओं के सदस्य, उत्तम स्त्रियें, सुम्र देश, बालीक, बलवान्, कलाकुशल, मत्स्य देश और यमुना तटके देश—इनको पीड़ा होवे।

**कर्क राशि फल—**

आभीरपल्हवशान् शबरांश्च मत्स्यान्  
पांचालमल्लविकलांश्च गुरुब्रह्मन्यात् ।  
मांजिष्ठमोक्तिकघृताच्च गुडाश्च तैल  
नश्यन्ति कर्कटगतं ग्रहणं यदि स्यात् ॥ १९ ॥

ग्रहण कर्क राशि में हो तो आभीर, पल्ह, शबर, मत्स्य पंजाब, मल्ल, विकल मनुष्य, गुरुनन—इनको पीड़ा और मजीठ, मोनी, घृत, गुड़, तैल—इत्यादि का भक्षण तेज हो जावे।

**सिंह राशि फल—**

सिंहे पुलिंदगणमेकलसत्त्वयुक्ता  
स्तेजोमयान्नरपतिन्वन गोचरांश्च ।  
काश्मीरकांश्च विनिहन्ति पथुंश्च दुर्ग  
ये संश्रिता अपि च तान् ग्रहणं रवीन्दोः ॥ १४० ॥

ग्रहण सिंह राशि में हो तो पुलिंद, काश्मीर, गण, मेकल, देश, किले में रहने वाले, सत्व युक्त, तेजस्वी राजा, वन में विचरने वाले, और, पशु—इनको पीड़ा होवे।

**कन्या राशि फल—**

कन्यागते रविशशिग्रहणे विनाश  
मायांति सस्यकविलेखकगेयमक्ताः ।  
देशास्तथात्रिपुरशालियुताश्मकाश्च  
सिद्धौपधेययुवती जनिताश्च गर्भा ॥ १४१ ॥

ग्रहण कन्या राशि में हो तो खेती वाले, लेखक, मकान में रहने वाले, त्रिपुर तथा अश्मक देश कोरुष्ट, स्त्रियों के गर्भों को पीड़ा और चावल तथा ओषधियों का नाश होवे ।

तुला राशि फल—

तुलाधरेखंसपरांससाधून् वणिग्दर्शानान् रुरुकछपांश्च ।

हन्यारवीन्द्रौर्गहणंतु राज्ञां करोति युद्धं त्वय दृष्टिनाशं ॥१४२॥

ग्रहण तुला राशिमें होतो परान्त देश, साधूनन, व्यापारी, दशार्ण, कुरु तथा कच्छ देशमें कष्ट; वर्षाका नाश और राजाओंमें परस्पर युद्ध होवे ।

वृश्चिक राशि फल—

अलिन्यथोडुंघरमद्रचोलान् दुमान् सयोधेयविपांबुधीयान् ।

हिमांशुसूर्यग्रहणं निहांति घनाधिपांश्चापि सुभिक्षकृत्स्मात् ॥१४३॥

ग्रहण वृश्चिक राशि में हो तो उदंबर, मद्र, चोल तथा योधेय देश, अफीम आदि विष, जल, और बुद्धिवान् तथा घनवान्—इनको पीड़ा और जगत् में सुभिक्ष होवे ।

धन राशि फल—

ग्रहो रवीदोर्यदि चापरासौ हन्यादवासान्वरवाजिमल्लान् ।

विदेहपांचालवणिग्जनोग्रा युद्धश्वैद्यांश्च तथौषधानि ॥ १४४ ॥

ग्रहण धन राशि में हो तो राज्य मन्त्रि, श्रेष्ठ घोड़े, मछ विदेह व पंजाब आदि देशों, व्यापारी, योधा, वैद्य और ओषधी—इनको पीड़ाहोवे ।

मकर राशि फल—

हन्यान्मृगे तुल्यमंत्रिकुलानि नीचान्

मंत्रौषधेषु कुशलां स्थविरायुधे यान् ।

अन्यांस्तथायुधकरान् ग्रहणं रवीदो

र्देशांश्च दक्षिणभवान् प्रवदंति संतः ॥१४५॥

ग्रहण मकर राशि में हो तो मच्छियों, मन्त्री, नीच कुल के मनुष्य, मन्त्रवादि, ओषधियों को पहिचानने वाले, स्थिर-तृशादि, आयुर्वेद कुशल मनुष्य और दक्षिण देश वासी—इन को पीड़ा होने ।

कुम्भ राशि फल—

कुम्भे यदा ग्रहणमिद्विनयोस्तदांती  
पाश्चात्यजान् गिरिभवान् दरदानजनाश्च ।  
आभीरकानापि पुरानपिबर्बराश्च  
भारोद्दहार्यं गजचौरनृपाः निहन्ति ॥ १४६ ॥

ग्रहण कुम्भ राशि में हो तो पश्चिम देश वासी, पर्वनों पर रहने वाले, दारु देश निवासी, आभीर व बर्बर देश, भार उठाने वाले उष्ट आदि, हाथी, चोर और राजा—इनको पीड़ा होवे ।

मीन राशि फल—

मीनस्थितं ग्रहणमिद्रुसहस्रभान्वोः  
प्राज्ञान् जनाश्च धनिनो जलजीविनश्च ।  
हन्याच्च मागरतटे च समुद्रजानि  
द्रव्याणि नाशमुपयान्ति च मानयुक्ताः ॥ १४७ ॥

ग्रहण मीन राशि में हो तो विद्वान्, धनवान्, भल से जीविका करनवाले, समुद्र के किनार के देशों में रहने वाले, समुद्र में उत्पन्न होने वाले शीप शाल आदि द्रव्य और अभिमान वाले मनुष्य—इन को पीड़ा होवे ।

राशि घश सं हरणक वस्तु की तेजी भन्दी—

यस्मिन् राशौ भवेत्पर्व तस्यावाप्य क्रयाणकम् ।  
अत्यर्घ्यलभतेमूल्यं पीड्यमाने च राहुणाः ॥ १४८ ॥

ग्रहण मेषाद चाहेनिस राशि में हो उस राशि के नामकी वस्तुए बहुत महंगी हो जावे जैसे ग्रहण मेष राशि में हो तो निन वस्तुओं की मेष राशि होगी वे वस्तुए बहुत महंगी हो जावे ।

नीच राशि स्थित चन्द्र ग्रहण फल—

नीचावर्लाम्बसोयस्तु यदा गृह्येत राहुणा ।

सर्पाकारास्तदा भर्त्ता सरूक्षस्थम्परि पीडयेत् ॥ १४९ ॥

अल्पां चन्द्रश्च दीपाश्च म्लेच्छो; पूर्वापरादिजाः ।

दीक्षिताः क्षत्रिया भृत्ताः शूद्राः पांडामवाप्नुयः ॥ १५० ॥

चन्द्र ग्रहण के समय चन्द्रमा नीच राशि—वृश्चिक राशि का हो तो सर्पाकार तथा भर्त्ता देश में रोगादि का उपद्रव, तथा यह भक्ति में चन्द्रमा निम्न देशों का स्वामि है उन देशों में तथा म्लेच्छ, ब्राह्मण, दीक्षित, क्षत्री भृत्य—नौकर और शूद्र—इनको पीडा होवे ।



खांश ( आकाश भाग ) फल प्रकरण ।

खांश निर्णय—

रात्रेर्दिनस्य च मितिस्तुरगैर्विभाज्या

लब्धं नभोऽंशक मितिस्तुगतेष्टनाख्यः ।

खांश प्रमाण विद्वताः फल संख्ययावत्

खांशादिने निशि च तं नगसंख्यकास्युः ॥ १५१ ॥

ग्रहण का स्पर्श अर्थात् प्रारम्भ दिन में हो तब तो दिन मानकी घटि पल ( सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त ) के और रात्रि में हो तो रात्रि मानकी घटि पल। सूर्यास्त से सूर्योदय पर्यन्त ) के ७ भाग कर इसे आकाश भाग माने हैं । फिर ग्रहण के स्पर्श समय की घटि पल जिस आकाश भाग में हो उस के अनुसार ग्रहण के स्पर्श समय का आकाश भाग जाने इसे खांश भी कहते हैं ।

प्रथम खांश का फल—

आद्ये नभोऽंशे ग्रहणं रवीन्दोः गुणाधिकान नैकृषि कांश्चविमान्  
हुताश्वर्त्तिश्च समस्तमज्ञान् भद्रांस्तथैवाश्रमिणो निवृत्तिः ॥ १५२ ॥

ग्रहण का स्पर्श आकाश के प्रथम भागमें हो तो गुणि जन, खेती करने वाले, ब्राह्मण, लुहार, सुनार, हलवाई माड़ भूँजे अर्जुन आदि अग्री जीवि, यज्ञ करने वाले, बुद्धिमान् और वान प्रस्तादि आश्रमी-इत्यादिको कष्ट होवे।

दूसरे खांश का फल—

खांशे द्वितीये ग्रहणं रवीन्दोः कृषीवलानां बलनायकानाम् ।  
पात्राण्डिनां चापि वणिक्जमानां राजन्यकानां च विनाश कृत्स्नात्

ग्रहण का स्पर्श आकाश के दूसरे भाग में हो तो खेती करनेवाले, सेनापति, पापंडी, व्यापारी वा महाजन और राजपूत आदिके पीड़ा होवे।

तीसरे खांश का फल—

खांशे तृतीये ग्रहणं रवीन्दोः म्लेच्छांश्च शुद्रानपिमंत्रिणश्च ।  
कारुणिहिन्यादपि मध्यदेशं छत्रं च कांस्यत्रपुकं मर्घम् ॥१५४॥

ग्रहण का स्पर्श आकाश के तीसरे भाग में होतो म्लेछ, शुद्र, राज्य मन्त्री, कारुक जन आदि को कष्ट; मध्य देश के राजा को पीड़ा और कांसी तथा कतीर का भाव तेज होवे।

चौथे खांश का फल—

खांशे चतुर्थे ग्रहणं रवीन्दोः तदा निहन्पात्बलुमध्यदेशम् ।  
नृपास्तयामंत्रिजनान् पशूश्च धान्यं च सर्वं कुरुते मर्घम् ॥१५५॥

ग्रहण का स्पर्श आकाश के चौथे भाग में हो तो मध्य देश का नाश, राजा तथा राज्य मंत्रियों को कष्ट, पशुओं को दुःख और सर्व प्रकार के धान्यों का भाव तेज हो जावे।

पांचवें खांश का फल—

आकाशभागे यदि पंचमे स्यात् हिमांशु सूर्ये ग्रहणे तदानीम् ।  
वैस्पानपत्यांश्च पशूश्चहिन्यादंतः पुरवापितिलान् शिशूश्च ॥१५६॥

ग्रहण का स्पर्श—आकाश के पाञ्चवें भाग में हो तो वैश्य, बालक, पशु तथा राजाओंके अन्तपुर (रनवास) आदि को कष्ट पीड़ा और तिलों का भाव तेज हो जाये।

छठे खांश का फल—

पष्ठेन योशे ग्रहणे रविन्दोः स्त्रीश्रूद्ररत्नाश्च निहंतिकन्याः ॥

सुवर्ण कर्पूरक कुंकुमानां महर्घतस्यादपि नागबलमाः ॥१६०॥

ग्रहण का स्पर्श—आकाश के छठे भाग में हो तो स्त्रियो, कन्याओं, तथा शूद्रों का नाश; नागरवेल के पानों की कमी, और सोना, रत्न, कपूर, केसर आदि का भाव तेज हो जावे।

सातवें खांश का फल—

खांशे यदा सप्तमके रविन्दोः ग्रहस्तदा चौर विमर्दकर्त्ता ॥

प्रसंतदिचापि गजाम्भवेद्यापीडा करो वस्त्र विनाशकृच्च ॥१६१॥

ग्रहण का स्पर्श आकाश के सातवें भाग में हो तो चौरों का उपद्रव, हाथी तथा घोड़ों को कष्ट, पैश्यों को पीड़ा और कपड़े का भाव तेज हो जावे।

अष्टम्यान्तर में आठ खांश फल—

यौवनस्थाश्च पूर्वाह्णे हन्ति यज्ञविदाञ्जनान् ।

औदकानि च सत्त्वानि नागेन्द्रश्चात्र दुःखितः ॥१६२॥

ग्रहण का स्पर्श आकाश के आठ भाग में हो तो यौवन अवस्था वाले, यज्ञ करने वाले, जल से उत्पन्न होने वाले और हाथीपों के स्वामि—इनको पीड़ा होवे।

अष्टम्यान्तर से मध्य खांश फल—

अथ मध्यस्थ संघातः शूद्रान् हन्ति सतस्करान् ।

उपरक्तो नृपः हन्ति चन्द्रश्च वरवारणात् ॥१६३॥

ग्रहण का स्पर्श आकाश के मध्य भाग में हो तो शुद्ध, चोर, और, राजा को पीड़ा होवे ।

ग्रन्थान्तर से अन्त्य खांश फल—

प्रलम्बः प्रमदां हन्ति क्षत्रं राष्ट्रं च सर्वशः ।

त्रिगर्त्ताश्चात्र पीड्यन्ते मत्स्याश्च कुरवो जनाः ॥१६४॥

ग्रहण का स्पर्श आकाश के अन्त भाग में हो तो स्त्रियों, क्षत्री, राज्य, त्रिगर्त्त, मत्स्य और कुरु देश—इनको पीड़ा होवे ।

ग्रन्थान्तर से सन्ध्याकाल फल—

सन्ध्याकाले तु गर्भस्या गृहीतः पीडयेत् प्रजाः ।

गावो गर्भं विमुञ्चन्ति न च वर्षेत् पुरन्दरः ॥१६५॥

ग्रहण का स्पर्श सन्ध्या काल में हो तो गर्भवन्ती स्त्रियों को पीडा, गायों के गर्भों का नाश और वर्षा का अभाव होवे ।

मोक्ष समय का खांश फल—

एवं खांश फलं मोक्तं ग्रहणे स्पर्श कालजम् ।

यस्मिन् खांशे विमुक्ति स्पात्तत्वाक्तानां शिवं भवेत् ॥१६६॥

ग्रहण के स्पर्श समय के आकाश भाग के अनुसार निम्न के लिये निम्न प्रकार से उपरोक्त अशुभ फल लिखा है उन्हीं के लिये मोक्ष समय के आकाश भाग के अनुसार उमी प्रकार से शुभ फल होता है अर्थात् जिस भाग में स्पर्श हो उस भाग वालों के लिये अशुभ और जिस भाग में मोक्ष हो उस भाग वालों के लिये शुभ फल ज्ञान ।



ग्रस्तोदय, ग्रस्तास्त व ख्यास फल प्रकरण ।

सूर्य चन्द्र ग्रस्तोदय फल—

उदितो ग्रहणं सूर्य चन्द्रमा यदि वा भवेत् ।

राजा शुद्धं प्रजानाशं मर्व प्रमत्तोति दुःखदा ॥१६७॥

प्रत्युत्तमो रविश्चन्द्रो गृह्यते यदि तत्र च ।

भयं तदा विजातीया ब्राह्मणानामुपस्थितम् ॥१६८॥

ग्रहण ग्रस्तोदय हो तो राजाओं में युद्ध, प्रजा में क्लेश, ब्राह्मणों में भय और सम्पूर्ण ग्रहण हो तो जगत् में बहुत दुःख होवे।

सूर्य ग्रस्तोदय ग्रस्तास्त फल—

उदया क्षमयेवाऽपि सूर्यस्य प्राणं भवेत् ।

तदा नृपभयं विद्यात् पर चक्रस्य चागमम् ॥१६९॥

सूर्य वा ग्रहण ग्रस्तोदय वा ग्रस्तास्त हो तो श्रेष्ठ राजा को भय, देश में सेना का उपद्रव और महाननों को कष्ट पीड़ा होवे।

चन्द्र ग्रस्तोदय ग्रस्तास्त फल—

यावत्तेशान् गृहीत्स्वन्दुरुदयस्तमेति वा ।

तावत्तेशान्भृथिव्यास्तु तम एव विनाशयेत् ॥१७०॥

चन्द्रमा का ग्रहण ग्रस्तोदय वा ग्रस्तास्त हो परन्तु ऐसा ग्रहण जिस दिशा में तथा जिनना ग्रस्त हो उस दिशा के देशों का उतने प्रमाण से नाश होवे।

खग्रास फल—

सूर्येन्द्रोःसर्वथा भासे सर्वस्यापि महर्घता ॥१७१॥

ग्रहण खग्रास अर्थात् सम्पूर्ण ग्रहण हो तो व्यापार की सम्पूर्ण वस्तुएं मंहगी हो जावे अतः पहिले से खरीदने वालोंको लाभ होवे।

खग्रास पाप दृष्टि फल—

ग्रस्तौ समस्तौ यदि पापदृष्टौ हिमांशुसूर्यौ भरक मदौस्तः ।

दुर्भिक्षदौ क्षत्रियदुःखदौ च भयं प्रजानां परचक्रजस्यात् ॥१७२॥

ग्रहण खग्रास हो और सूर्य ग्रहण समये सूर्य पर तथा चन्द्र ग्रहण समय चन्द्रमा पर क्रूर ग्रह की दृष्टि भी हो तो जगत् में महामारी का



ग्रहण का स्पर्श आकाश के मध्य भाग में हो तो शूद्र, चोर, और, राजा को पीड़ा होवे ।

ग्रन्थान्तर से अन्त्य खांश फल—

प्रलम्बः प्रमदां हन्ति सत्रं राष्ट्रं च सर्वशः ।

त्रिगर्त्ताश्चात्र पीड्यन्ते मत्स्याश्च कुरवो जनाः ॥१६४॥

ग्रहण का स्पर्श आकाश के अन्त भाग में हो तो स्त्रियों, क्षत्री, राज्य, त्रिगर्त, मत्स्य और कुरु देश—इनको पीड़ा होवे ।

ग्रन्थान्तर से सन्ध्याकाल फल—

सन्ध्याकाले तु गर्भस्था गृहीतः पीडयेत् प्रजाः ।

गावो गर्भं विमुञ्चन्ति न च वर्षेत् पुरन्दरः ॥१६५॥

ग्रहण का स्पर्श सन्ध्या काल में हो तो गर्भवन्ती स्त्रियों को पीड़ा, गायों के गर्भों का नाश और वर्षा का अभाव होवे ।

मोक्ष समय का खांश फल—

एवं खांश फलं मोक्षं ग्रहणे स्पर्श कालप्रम् ।

यस्मिन् खांशे विमुक्तिं स्यात्तत्त्वोक्तानां शिवं भवेत् ॥१६६॥

ग्रहण के स्पर्श समय के आकाश भाग के अनुसार निम्न के लिये निम्न प्रकार से उपरोक्त अशुभ फल लिखा है उन्हीं के लिये मोक्ष समय के आकाश भाग के अनुसार उसी प्रकार से शुभ फल होता है अर्थात् जिस भाग में स्पर्श हो उस भाग वालों के लिये अशुभ और जिस भाग में मोक्ष हो उस भाग वालों के लिये शुभ फल जाने ।



ग्रस्तोदय, अस्तास्त व खग्रास फल प्रकरण ।

सूर्य चन्द्र ग्रस्तोदय फल—

उदितो ग्रहणं सूर्य चन्द्रमा यदि वा भवेत् ।

राजा शुद्धं प्रजानाशं सर्वं ग्रस्तोति दुःखदा ॥१६७॥

प्रत्युत्तमो रविश्चन्द्रो गृह्यते यदि तत्र च ।

भय तदा विजातीया ब्राह्मणानामुपस्थितम् ॥१६८॥

ग्रहण ग्रस्तोदय हो तो राजाओं में युद्ध, प्रजा में क्लेश, ब्राह्मणों में भय और सम्पूर्ण ग्रहण हो तो जगत् में बहुत दुःख होवे।

सूर्य ग्रस्तोदय ग्रस्तास्त फल—

उदया स्तमयेवाऽपि सूर्यस्य प्राणं भवेत् ।

तदा नृपभयं विद्यात् पर चक्रस्य चागमम् ॥१६९॥

सूर्य का ग्रहण ग्रस्तोदय वा ग्रस्तास्त हो तो श्रेष्ठ राजा को भय, देश में सेना का उपद्रव और महाननों को कष्ट पीड़ा होवे ।

चन्द्र ग्रस्तोदय ग्रस्तास्त फल—

यावत्तेशान् गृहीत्वन्दुरुदयस्तमेति वा ।

तावन्तेशान्धृथिव्यास्तु तम एव विनाशयेत् ॥१७०॥

चन्द्रमा का ग्रहण ग्रस्तोदय वा ग्रस्तास्त हो परन्तु ऐसा ग्रहण जिस दिशा में तथा जितना ग्रस्त हो उस दिशा के देशों का उतने प्रमाण से नाश होवे ।

खग्रास फल—

सूर्येन्द्रोःसर्वथा ग्रासे सर्वस्यापि महर्घता ॥१७१॥

ग्रहण खग्रास अर्थात् सम्पूर्ण ग्रहण हो तो व्यापार की सम्पूर्ण यस्तुएं मंहगी हो जावे अनः पहिले से खरीदने वालोंको लाभ होने ।

खग्रास पाप दृष्टि फल—

ग्रस्तौ समस्तौ यदि पापदृष्टौ हिमांशुसूर्यौ मरक मदीस्तः ।

दुर्भिक्षदौ क्षत्रियदुःखदौ च भयं प्रजानां परचक्रजस्यात् ॥१७२॥

ग्रहण खग्रास हो और सूर्य ग्रहण समये सूर्य पर तथा चन्द्र ग्रहण समय चन्द्रमा पर घुर ग्रह की दृष्टि भी हो तो जगत् में महामारी का

उपद्रव, दुर्मिक्ष का भय, राजाओं—शत्रियों को पीड़ा और प्रजा को पराई सेना के उपद्रव का भय होवे।



## दिशा फल प्रकरण ।

ईशान कोण फल—

ईशान्यां दृश्यते राहुर्ग्रासेहिमरुचेर्यदा ।

महाबातं महाशीतं सुभिर्लं केशिताः प्रजाः ॥ १७३ ॥

ग्रहण का स्पर्श ईशान कोण से हो तो वायु का वेग अधिक, अति शीत, सुभिर्ल और प्रजाको क्लेश होवे ।

पूर्व दिशा फल—

पूर्वस्यां दृश्यते राहुस्तोयपूर्णवस्तुंपराम् ।

करोति राजपुत्रांश्च हन्याच्चैव वरांगनाः ॥ १७४ ॥

ग्रहण का स्पर्श पूर्व से हो तो वर्षा अधिक, शत्रियों को कष्ट और श्रेष्ठ स्त्रीकी पीड़ा होवे ।

अग्नि कोण फल—

अग्नि्यां हिमगोर्ग्रासे दृश्यते राहुमण्डलम् ।

अग्निचौरभयं चैव मन्नवस्त्रमद्वर्धत ॥ १७५ ॥

ग्रहण का स्पर्श अग्नि कोण से हो तो अग्नि का भय, चोरों का उपद्रव और धान्य तथा वस्त्र तेज हो जावे ।

दक्षिण दिशा फल—

चन्द्रार्कग्रहणे ग्रासो दक्षिणस्यां यदा भवेत् ॥

हन्याजलचरान् वैश्यान् गजांश्च जलदानादि ॥ १७६ ॥

ग्रहण का स्पर्श दक्षिण से हो तो जलचर प्राणियों का नाश, वैश्यों को पीड़ा, हाथियों को कष्ट और वर्षा की कमी होवे ।

नैऋत्य कोण फल—

मूर्याविवे यदाग्रासो नैऋत्यां राट्टु दर्शनम् ।

दुर्भिक्षं निष्ठुरालोकाः साधवो यांति पीडनम् ॥ १७७ ॥

ग्रहण का स्पर्श नैऋत्य कोण से हो तो दुर्भिक्ष का भय, लोगों में निष्ठुरता, और साधु पुरुषों को पीड़ा होवे ।

पश्चिम दिशा फल—

मूर्यग्रासश्च वारुण्यां क्षेमरोग्यसुभिक्षकृत् ॥

हन्यात् कृषिकरान् धीजं शुद्रान् सेवाकरांस्तथा ॥ १७८ ॥

ग्रहण का स्पर्श पश्चिम से हो तो जगत् में क्षेम, आरोग्य, सुभिक्ष आदि का सुख किन्तु खेती करने वालों, शूद्रों, नोकरी करने वालों और सर्व प्रकार के बीजों का नाश होवे ।

वायव्य कोण फल—

भास्करग्रासकाले च वायव्या दृश्यते तपः ॥

महावातप्रचंडाभिदृष्टिभिः खंडमंडलम् ॥ १७९ ॥

ग्रहण का स्पर्श वायव्य कोण से हो तो वायु महान् प्रचंड चले और वर्षा विषम अर्थात् कहीं तो होवे और कहीं बिल्कुल ही नहीं होवे ।

उत्तर दिशा फल—

उत्तरस्यां दिशि यदा दृश्यते सिंहिकासुतः ।

गवां पीडा च विप्राणामश्वानां वनवासिनाम् ॥ १८० ॥

ग्रहण का स्पर्श उत्तरसे हो तो गायों को पीड़ा, ब्राह्मणों को कष्ट, घोड़ों की हानी और वनवासियों को श्लेश होवे ।

## ग्रास फल प्रकरण ।

दश प्रकार ग्रास निर्णय—

सव्यापसव्य लेह ग्रसन निरोधावमर्दनारोहाः ।

आघ्रान्तं मध्यतमस्तमोऽस्त्य इति ते दश ग्रासाः ॥ १८१ ॥

ग्रहण के (१) सव्य, (२) अपसव्य, (३) लेह, (४) ग्रसन, (५) निरोध, (६) अवमर्दन, (७) आरोहण, (८) आघ्रान, (९) मध्यतम और (१०) अन्न नम नामक दश प्रकार के ग्रास होते हैं ।

सव्य ग्रास फल—

राहुर्यदा मध्यगतः शहश्यते प्रजाविवृद्धिः समुपिष्यनिभर्य ॥

वृष्टिः प्रभूतायुदितं जगद्रवेत् सेव युनाधर्मरताश्च मानवाः ॥ १८२ ॥

सूर्य ग्रहण का स्पर्श वायव्य कोण में और चन्द्र ग्रहण का स्पर्श अग्नि कोण से हो तो वह मध्य ग्रहण नामक ग्रास होता है । ऐसा ग्रास हो तो सुवृद्धि, सुभिक्ष, प्रजा की वृद्धि, जगत में प्रमत्तता, परोपकार में प्रवृत्ति और धर्म में श्रद्धा वाले मनुष्य होंगे ।

अप सव्य ग्रास फल—

राहुर्यदा यात्यपसव्यगत्या तदा प्रजानां नृपपीडनं स्यात् ॥

दुर्भिक्षचोराभिभर्य सारोगमत्पां च वृष्टिं प्रकरोति मेघः ॥ १८३ ॥

सूर्य ग्रहण का स्पर्श नैऋत्य कोण से और चन्द्र ग्रहण का स्पर्श ईशान कोण से हो तो वह अप सव्य नामक ग्रास होता है ऐसा ग्रास हो तो प्रजा को राजाका कष्ट, दुर्भिक्ष का भय, चोरों की पीड़ा, अग्नि का उपद्रव, रोगों का भय, और वर्षा की कमी होंगे ।

लेह ग्रास फल—

जिह्वोपलेदिपरितस्तिभिरनुदो मंडलं यदि सलेहः ॥

प्रमुदितसमस्तभूताः प्रभूत तोया च तत्र मही ॥ १८४ ॥

ग्रहण के समय सूर्य वा चन्द्रमा का बिम्ब बीचमें से जैसे निव्हासे चोटे हुये के सदृश्य दीखे उसे लेह नामक ग्रास कहते हैं। ऐसा ग्रास हो तो सम्पूर्ण प्राणि प्रशन्न रहै और वर्षा बहुत होवे।

ग्रसन ग्रास फल—

ग्रसनामिति यदा अंशः पादो वा गृह्यते तथाप्यर्द्ध ।

स्फीतनृपवित्तहारीपीडा च स्फीतदेशानाम् ॥ १८५ ॥

ग्रहण के समय सूर्य वा चन्द्रमा के तृतीयांश, चौथाई वा आधे बिम्ब को ग्रहण हो तो उसे ग्रसन, नामक ग्रास कहते हैं। ऐसा ग्रास हो तो स्फीत देश के राजा को कष्ट, प्रजा को पीड़ा और धन की हानी होवे।

निरोध ग्रास फल—

पर्यन्तेषु गृहीत्वा मध्यापिंडिभूतं तमस्तिष्ठेत्

सनिरोधो विज्ञेयः प्रमोदकृत्सर्व भूतानाम् ॥ १८६ ॥

ग्रहण के समय सूर्य वा चन्द्रमा का बिम्ब के चरों ओर में ग्रहण लग कर बीच में पिंडाकार हो तो उसे निरोध नामक ग्रास कहते हैं। ऐसा ग्रास हो तो सम्पूर्ण जगत् को आनन्दप्रद होवे।

अवमर्दन ग्रास फल—

अवमर्दमितिनिः शेषमेव संछाद्यमिव तिष्ठेत् ॥

हन्पात् प्रधानपुरुषान् प्रधानदेशाश्च तिमिरमयः ॥ १८७ ॥

ग्रहण के समय सूर्य चन्द्रमा के सम्पूर्ण बिम्ब को छान करके बहुत समय तक ग्रहण रहै तो उसे अवमर्दन नामक ग्रास कहते हैं। ऐसा ग्रास हो तो प्रधान पुरुषों को कष्ट और प्रधान देशों के पीड़ा होवे।

आरोहण ग्रास फल—

वृत्ते ग्रहे यदि तमस्तत्क्षणमावृत्त्यदृश्यते भूयः ॥

आरोहणमित्यन्यान्यमर्दनैर्भयकरं राज्ञा ॥ १८८ ॥

ग्रहण होने के उपरान्त फिर तत्काल ग्रह होना हुआ दीखे तो उसे आरोहण नामक ग्रह कहते हैं। ऐसा ग्रह हो तो रानाओं को परस्पर एक दूसरे का भय होवे।

आघ्रात ग्रहण फल—

दर्पणामिवैकदेशे सवाप्यनिश्वासमारुणापहतम् ।

दृश्येताघ्रातं तत्सुखाष्टिद्वयावद्वजगतः ॥ १८९ ॥

ग्रहण के समय सूर्य चन्द्रमा का बिम्ब एक ओर दर्पण के समान वायु वा धूप से मलीन दीखे तो उसे आघ्रात ग्रहण कहते हैं। ऐसा ग्रहण हो तो वर्षा श्रेष्ठ तथा जगन् की वृद्धि होवे।

मध्यतम ग्रहण फल—

मध्य तमः प्रविष्टं वितमस्कं यदि मंडलं परितः ॥

तन्मध्यदेशनाशं करोति कुक्ष्याभयभयं च ॥ १९० ॥

ग्रहण के समय सूर्य चन्द्रमा का बिम्ब बीच में से ग्रहण तथा अन्त में मण्डल के समान हो तो उसे मध्यतम नामक ग्रहण कहते हैं। ऐसा ग्रहण हो तो मध्य देश को पीड़ा और उदर रोग का भय होवे।

अन्ततम ग्रहण फल—

पर्यन्तेष्वति बलं स्वयं मध्यतमस्ततोन्त्यारूपे ।

सस्यानामिति भयं भयंमस्मिन्स्तस्कराणां च ॥ १९१ ॥

ग्रहण के समय सूर्य चन्द्रमा का बिम्ब बीच में से तो स्पष्ट और अन्त में ग्रहण हो तो उसे अन्ततम ग्रहण कहते हैं। ऐसा ग्रहण हो तो किसी प्रकार के उपद्रवों से खेतिर्यों का नाश तथा जगन् में चोरो का भय होवे।

## वर्ण फल प्रकरण ।

धूम्र वर्ण फल—

धूमे क्षेमं सुभिक्षं च वर्षते ह्यमृतोपमम् ।

महोत्साही भवेन्नोकः सर्वोपद्रववर्जितः ॥ १९२ ॥

ग्रहण का वर्ण धूम्र हो तो जगत् में क्षेम, कल्याण, सुवृष्टि, सुभिक्ष तथा मंगलीक उत्सव अधिक और सर्व प्रकार के उपद्रवों का नाश होवे ।

कृष्ण वर्ण फल—

महिषा मद्यकाराश्च कुंजरा वह्निजीविनः ।

शूद्राश्चैव प्रपीड्यन्ते कृष्णवर्ण विधुन्तुदे ॥ १९३ ॥

ग्रहण का वर्ण कृष्ण हो तो मद्य बनाने वालों, भैंसियों, हाथियों, अग्नि से आजीविका करने वालों और शूद्रों को पीड़ा होवे ।

ताम्र वर्ण फल—

रक्तः कृष्ण विमिश्राभे सस्यानां वज्रजंभयम् ।

युद्धं परस्परं राज्ञां प्रजानां पीडनं भवेत् ॥ १९४ ॥

ग्रहण का वर्ण लाल और काला-मिला हुआ ताम्र के समान हो तो बिजली गिरने से खेनियों का नाश होवे ।

कपिल वर्ण फल—

कपिले शीघ्रगाः सत्त्वा म्लेच्छानाशं प्रयांति हि ।

दुर्भिक्षं नृपपयुद्धं च शेषवर्णा अनिष्टदा ॥ १९५ ॥

ग्रहण का वर्ण काला और पीला मिला हुआ कपिल वर्ण हो तो शीघ्र चलनेवाले हरण तथा उंट आदि पशुओं को पीड़ा, म्लेछों को कष्ट, दुर्भिक्ष का भय और राजाओं के युद्ध होवे ।

वर्णवश ब्राह्मणादि वर्णों को अशुभ फल—

रक्तो राहु शशी सूर्यो हन्यासैत्रान् सितोद्विजान् ।

विशः पीतो विवर्णस्तु कृष्णः शूद्राद्विघांसति ॥ १९६ ॥



ग्रहण का वर्ण श्वेत हो तो ब्राह्मणों का, लाल हो तो क्षत्रियों का, पीला हो तो वैश्यों का काला हो तो शुद्रों का और विवर्ण ( मिश्र वर्ण ) हो तो विजातियों का नाश हवे ।

वर्णवशा विंशत्य फल—

श्वेतक्षेम सुभिक्षं ब्राह्मणपीडां च निर्दिशेद्राहौ ।

अग्निभयमनिलवर्णे पीडा च हुताशवृत्तिनाम् ॥ १९७ ॥

हरितेरोगोलवणता सस्यानामीतिभिश्च विध्वंसः ।

कापिले शीघ्रगसत्व म्लेच्छध्वंसोऽथ दुर्भिक्षम् ॥ १९८ ॥

अरुणकिरणानुरूपे दुर्भिक्षावृष्टयो विवर्ण पीडा ।

आधून्ने क्षेममुभिक्षमादिक्षेन्मन्द वृष्टिं च ॥ १९९ ॥

कापोतरुण कपिलस्या वाग्ने भुद्ध्य विनिर्देश्यम् ।

कापोतः शुद्राणां व्याधिकरः कृष्ण वर्णश्च ॥ २०० ॥

विमलक मणिपीताभो वैश्यध्वंसी भवेत् सुभिक्षाय ।

साँचिष्मत्यग्निभयं गैरिकरूपे तु यद्दानि ॥ २०१ ॥

दूर्वाकाण्डश्यामे हारिद्रे वापि निर्दिशेन्मरकम् ।

अशनिभयमदायी पाटलि कुसुमोपमो राहुः ॥ २०२ ॥

पांशुविलोदितरूपः क्षत्रध्वंसाय भवतिवृष्टेश्च ।

बालरवि कमल मुरचाप रूपभृच्छत्रकोपाय ॥ २०३ ॥

ग्रहण का वर्ण श्वेत हो तो सुभिक्ष किन्तु ब्राह्मणों को पीडा, अग्नि के समान हो तो अग्नि का भय तथा अग्नि से जीविका करने वाले सुनार लुहार अमनेर आदि को पीडा, हरा हो तो रोगों का उपद्रव तथा अति वृष्टि अनावृष्टि टाडि आदि में खेनियों का नाश. कपिल होतो शीघ्र चन्दने वाले ऊट आदि प्राणियों व म्लेछों को कष्ट तथा दुर्भिक्ष का भय, लाल हो तो अनावृष्टि व दुर्भिक्ष का भय तथा पक्षियों को पीडा, धुन्न हो तो क्षेम व सुभिक्ष किन्तु वर्ण अधिक नहीं हवे, कपोत, लाल वा कपिल मि-

श्रित ज्याम हो तो दुर्मिश्र का भय, कषेत वा लुप्य हो तो शुद्धों को रोग भय, नील मणिके सदृश्य हरा वा पीला हो तो वैश्यों को पीड़ा, ज्वाला सदृश्य हो तो अग्नि का भय, गेरुके सदृश्य लाल हो तो युद्ध भय; दूरवा वा हरिद्रा सदृश्य हरा पीला हो तो महा मारी का भय, गुलाबी हो तो बिजली गिरने का भय, लाल मिश्रित धूलि सदृश्य हो तो क्षत्रियों का नाश तथा अनाश्रुति का भय, और प्रातःकाल के सूर्य, कमल वा इन्द्र धनुष्य के सदृश्य वर्ण हो तो शत्रु भय होवे ।

### ग्रह दृष्टि फल प्रकरण ।

सूर्य ग्रहण के समय सूर्य पर और चन्द्र ग्रहण के समय चन्द्र पर जिस ग्रह की दृष्टि होगी वही दृष्टि ग्रहण पर भी हो जाती है ।

**भौम दृष्टि फल—**

ग्रस्तं यदा पश्यति भूमिपुत्रो रक्तानि वस्त्रान्यखिलानि नाशम् ।  
मर्यति चौराग्निनृपादवैश्च पीडा प्रजानां च भवेत्तदानीम् ॥२०४॥

ग्रहण पर मंगल की दृष्टि हो तो लाल रंगकी सम्पूर्ण वस्तुओं का नाश, चोरों का भय, अग्नि का उपद्रव, रानाओं के युद्ध भय और प्रजा को कष्ट होवे ।

**बुध दृष्टि फल—**

ग्रस्तं बुधः पश्यति चेत्तदानीं मध्वाज्यतैलसयकचराज्ञाम् ।  
पीतामि धान्यानि च पीतपातुन् स्वर्णादिकानाशयति मभूतान् २०५

ग्रहण पर बुध की दृष्टि हो तो सस्व, तैल, घृत मक्की आदि पीला धान्य, सोना तथा पीतल आदि पीली धातु का नाश और रानाओं को कष्ट होवे ।

**शुक्र दृष्टि फल—**

शुक्रस्य दृष्टिर्ग्रहणे यदि स्यात्सस्यमणाशो भवति क्षितौ च ।  
 केशो मर्त्यापि सिताश्चघातु धान्यांवरानि प्रथयन्ति मूल्यम् ॥२०६॥

ग्रहण पर शुक्र की दृष्टि हो तो खेनियों का नाश, नावल ज्वार आदि स्वेन धान्य तथा चाँदी कतीर आदि स्वेन धातु मलमल जगनाधी आदि स्वेत कपड़े का भाव तेज और जगन में महान् क्लेश होंगे।

**शनि दृष्टि फल—**

शनैश्चरश्चेग्रहणं निरीक्षे दुर्भिक्षचौरोत्यभयं त्वदृष्टिम् ।  
 कृष्णानि धान्यानि च कृष्णघातून् कुर्यान्महर्घान्यां सितान् बिलेपान् ।

ग्रहण पर शनि की दृष्टि हो तो वर्षा का नाश, दुर्भिक्ष का कष्ट, चौरों का भय, उद्द आदि कृष्ण धान्य लोहो आदि कृष्ण धातु तथा कृष्णागर कस्तुरी आदि कृष्ण लेपन वस्तुओं का भाव तेज हो जावे।

**गुरु दृष्टि फल—**

जीवो यदा पश्यति सूर्यमिन्दुं अस्तं तदा सर्वं खगेक्षणाद्यत् ।  
 फलं त्वनिष्टं गदितं निहन्यात्सर्वत्र लोकेष्वपि सौख्यकृत्स्यात् ॥२०८॥

ग्रहण पर गुरु की दृष्टि हो तो मौमादि ग्रहों की दृष्टि के सम्पूर्ण अशुभ फलों का नाश होकर जगत्में सर्व प्रकार का सुख होवे।



## ग्रह अस्त फल प्रकरण ।

सूर्य ग्रहण के समय सूर्य जिस राशि का हो उसी राशि पर और चन्द्र ग्रहण के समय चन्द्र जिस राशि का हो उसी राशि पर जो ग्रह हो वह ग्रह भी अस्त कहलाता है।

**भौम अस्त फल—**

आवंतिका जनपदाः कावेरीनिर्मदातटाश्रमिणः ।

दिप्ताश्च मनुजयतयः पीडयन्ते क्षितिमुते अस्ते ॥ २०९ ॥

ग्रहण के समय मंगल अस्त हो तो उज्जयनी देश के रहनेवालों का-

बेरी तथा नरबदा के किनारे पर रहने वालों को पीड़ा और अभिमानी राजाओं को कष्ट होवे ।

बुध ग्रस्त फल—

अंतर्वेदी मरयुं नेपालं पूर्वसागरं शोणम् ।

स्त्रीनृपयोधकुमारान् ग्रस्तो ज्ञो इति विदुषश्च ॥ २१० ॥

ग्रहण के समय बुध ग्रस्त हो तो अन्तर्वेदी देश, सरयू नदी के देश नेपाल, पूर्व दिशा का समुद्र, शोणनद, स्त्री, राजा, बालक और विद्वान्—इन को पीड़ा होवे ।

बृहस्पति ग्रस्त फल—

ग्रहणोपगते जीवे विद्वन्मृपमंत्रिगजहय ध्वंसः ।

सिधुतटवासिनामप्युदीग्दशं संश्रितानां च ॥ २११ ॥

ग्रहण के समय बृहस्पति ग्रस्त हो तो विद्वान्, राज्य मन्त्रि, हाथी, घोड़ों, मिन्ध देश तथा उत्तर देश के लोग—इनको पीड़ा होवे ।

शुक्र ग्रस्त फल—

भृगुतनये राहुगते दशार्ण केकयरोपकाहणाः ।

आर्यावर्त्ताः शिष्यः स्त्रीसचिवगणाश्च पीडयन्ते ॥ २१२ ॥

ग्रहण के समय शुक्र ग्रस्त हो तो दशार्ण, केकेय, रोम, हूण, आर्या वत्त और शिषी—इन देशों को पीड़ा; स्त्रियों को कष्ट राज्य मन्त्रियों को श्लेश और प्रजा के मुख्य पुरुषों को दुःख होवे ।

शनि ग्रस्त फल—

सौरे मरुभवपुष्करसौराष्ट्रा घातवोर्बुदांसजनाः ।

गोमंत परियात्राश्रिताश्च ग्रस्ते विनश्यन्ति ॥ २१३ ॥

ग्रहण के समय शनि ग्रस्त हो तो मारवाड़, पुष्कर, सोरठ, आवू गोमंत और पर्वत प्रदेश—इन देशों में रहने वालों को पीड़ा और सर्व धान का भाव तेज हो जावे ।

## मोक्ष फल प्रकरण ।

दश प्रकार के मोक्ष निर्णय—

हनुकुक्षिपायु भेदा द्विर्द्विः संछर्दनं व जरणं च ।

मध्यंत्मयोश्च विदारणमिति दश शशिसूर्ययोर्मोक्षाः ॥ २१४ ॥

ग्रहण का मोक्ष (१) दक्षिण हनु, (२) वाम हनु, (३) दक्षिण कुक्षी, (४) वाम कुक्षी, (५) दक्षिण पायु, (६) वाम पायु, (७) संछर्दन, (८) जरण, (९) मय विदारण और (१०) अन्त्य विदारण ऐसे दश प्रकार के मोक्ष होते हैं ।

दक्षिण हनु मोक्ष फल—

अग्नेयामपगमनं दक्षिणहनुभेदसंज्ञितं शशिनः ।

सस्याविमर्दो मुखरूक्नृपपीडा स्यात्सुवृष्टिश्च ॥ २१५ ॥

ग्रहण का मोक्ष अग्नि कोण में हो तो वह दक्षिण हनु नामक मोक्ष होता है । ऐसा मोक्ष हो तो खेतियों का नाश, लोगों के मुख में रोग पीडा, राजाओं को वष्ट और वर्षा श्रेष्ठ होवे ।

वाम हनु मोक्ष फल—

पूर्वोत्तरेण वामो हनुभेदो नृपकुमारभयदायी ।

मुखरोगः शस्त्रभयं तस्मिन् विधात् सुभिक्षं च ॥ २१६ ॥

ग्रहण का मोक्ष ईशान कोण में हो तो वह वाम हनु नामक मोक्ष होता है । ऐसा मोक्ष हो तो राजकुमारों को भय, मुख का रोग, युद्ध का उपद्रव और सुभिक्ष होवे ।

\*दक्षिण कुक्षी मोक्ष फल ।

दक्षिणकुक्षिविभेदो दक्षिणपार्श्वे यदि भवेन्मोक्षः ।

पीडा नृपपुत्राणामभियोज्या दक्षिणारिषवः ॥ २१७ ॥

\* ग्रहण का दक्षिण कुक्षी और वाम कुक्षी मोक्ष लिखा है परन्तु गणित के सिद्धान्त से दक्षिण तथा उत्तर दिशा में मोक्ष होता ही नहीं भूत यह फल शास्त्रों में उल्लेखित वस्तु से मोक्ष होने का माना होगा ।

ग्रहण का मोक्ष दक्षिण में हो तो वह दक्षिण कुक्षी नामक मोक्ष होता है। ऐसा मोक्ष हो तो राजपूनों को पीड़ा और दक्षिण दिशा के शत्रुओं को कष्ट होवे।

**\*वाम कुक्षी मोक्ष फल—**

वामस्त कुक्षिभेदो यद्युत्तरमार्गमाश्रितो राहुः ।

स्त्रिणां गर्भविपत्तिः संस्यानि च तत्र मध्यानि ॥ २१८ ॥

ग्रहण का मोक्ष उत्तर में हो तो वह वाम कुक्षी नामक मोक्ष होता है। ऐसा मोक्ष हो तो स्त्रियों के गर्भों का नाश और स्त्रियों की उत्पत्ति साधारण होवे।

**दक्षिण पायु तथा वाम पायु मोक्ष फल—**

नैर्ऋतिवायव्यस्थौ दक्षिणवामौ तु पायुभेदौ द्वौ ।

गुह्यरुगल्पावृष्टिर्द्वयोस्तु राज्ञीक्षयो वामे ॥ २१९ ॥

ग्रहण का मोक्ष नैर्ऋत्य कोण में हो तो वह दक्षिण पायु और वायव्य कोण में हो तो वह वाम पायु नामक मोक्ष होता है। ऐसे मोक्ष हो तो लोगों को गुह्य रोग की पीड़ा, वर्षा अल्प होवे और वाम पायु मोक्ष में महाराणी को कष्ट होवे।

**मंडर्दन मोक्ष फल—**

पूर्वे मग्रहणं कृत्वा प्रागेवचापसर्पति ।

मंडर्दनमिति प्रोक्तं क्षेमं तस्य प्रदं जने ॥ २२० ॥

ग्रहण का स्पर्श पूर्व में होकर पीछा मोक्ष भी पूर्व में ही हो तो वह मंडर्दन नामक मोक्ष होता है। ऐसा मोक्ष हो तो जगत् में श्रेय कल्याण तथा स्त्रियों की वृद्धि होवे।

**जरण मोक्ष फल—**

प्राक् मग्रहणं यस्मिन् पश्चादपमर्पणं तु तज्जरणम् ।

धुच्छस्रभयोद्दिग्ना न शरणमुपयांति तत्र जनाः ॥ २२१ ॥

ग्रहण का स्पर्श पूर्व में होकर पीछा मास पश्चिम में हो तो वह ज-  
रण नामक मोक्ष होना है। ऐसा मोक्ष हो तो जगत् में दुर्भिक्ष का कष्ट और  
युद्ध का भय होन में लोग दुःखी हो जाते हैं।

मध्य विदारण मोक्ष फल—

मध्ये यदि प्रकाशः प्रथमं तन्मध्यविदारणं नाम ।

अतः कोपकरं स्यात्सुभिक्षदं नातिवृष्टिकरः ॥ २२२ ॥

ग्रहण के बीच में से प्रथम प्रकाश हो तो वह मध्य विदारण मोक्ष  
होना है। ऐसा मोक्ष हो तो राजाओं के घर ही में उपद्रव, और वर्षा  
साधारण होवे तथापि सुभिक्ष हो जावे।

अन्त्य विदारण मोक्ष फल—

पर्यंतपु विमलता बहुलं मध्ये तमोऽत्यदरणाख्यम् ।

मध्याख्यदेशनाशः गारदसस्यक्षयश्चापि ॥ २२३ ॥

ग्रहण के अन्त में प्रथम प्रकाश हो तो वह अन्त्य विदारण नामक  
मोक्ष होना है। ऐसा मोक्ष हो तो मध्य देश को कठ और शरद ऋतु में  
उत्पन्न होने वाले चावल मुंग ज्वार आदि की खेनियों का नाश होवे।

मोक्ष समय का घर्ण फल—

यथोत्साहं गृहीत्वा तु राहोर्निष्क्रमते शशी ।

तदा क्षेमं सुभिक्षं च मदरोमाश्च निर्दिशेत् ॥ २२४ ॥

ग्रहण के मोक्ष समय में मूर्य वा चन्द्रमा का विष्य निर्मल कान्ति  
का तथा मोक्षायमानं हो तो जगत् में क्षेम कल्याण तथा सुभिक्ष होवे।



## काल फल प्रकरण ।

एक ग्रहण में आगे होनेवाले ग्रहण का मासानुसार फल—

पञ्मासात्प्रकृतिर्ज्ञेया ग्रहाणां वार्षिकम्भयम् ।

ना त्रयो दशमामानां पुररोधां समादिशेत् ॥ २२५ ॥

प्रचतुर्दशमासानां विन्ध्याद्राहन जम्भयम् ।

अथ पञ्चदशे मासे बालानां भयमादिशेत् ॥ २२६ ॥

षोडशानान्तु मासानां महामन्त्रीभयं वदेत् ।

सप्तदशानां मासानां महाराज्ञी भयं दिशेत् ॥ २२७ ॥

तथाऽष्टादश मासानां विन्ध्याद्राज्ञस्ततो भयम् ।

एकोनविंशकं पर्वं विंशं कृत्वा नृपंवधेत् ॥ २२८ ॥

अतः परन्तु यत्सर्वं तन्निनोति कलिं भुवि ।

सूर्य के ग्रहण से आगे फिर सूर्य का ग्रहण और चन्द्रमा के ग्रहणसे आगे फिर चन्द्रमा का ग्रहण ६ । ६ महिनों से होने का स्वभावीक क्रम है परन्तु जिस देश में इस क्रम को छोड़ कर कोई भी ग्रहण हो तो यह ग्रहण उस देश के राजा के लिये अशुभ फलकारक होता है जैसे—प्रथम के ग्रहण से आगे का ग्रहण १२ महिनों से हो तो जगत् में भय, १३ महिनों से हो तो किसी देश के राज्य के नय को शत्रुओं की सेना से घिर जाने का भय, १४ महिनों से हो तो वाहन से भय, १५ महिनों से हो तो राजकुमारों को भय, १६ महिनों से हो तो महा मन्त्रि को भय, १७ महिनों से हो तो महाराणी को भय, १८ महिनों से हो तो स्वयं राजा को भय और १९ वा २० महिनों से हो तो राजा को मृत्यु समाप्त महान् क्षेश होवे । और इससे आगे चाहे जितने महिनों से ग्रहण होवे तो वे सब ग्रहण जगत् के लिये महान् अशुभ फल कारक होते हैं ।

छ मास से होने का फल—

स्वर्भानुरिन्दुषष्टे ॥ मासे यदुपतिष्ठति ।

तदा क्षेमं सुभिक्षं च योगक्षेमं च निर्दिशेत् ॥ २२९ ॥

सूर्य वा चन्द्रमा का प्रथम ग्रहण हो उस से आगे होने वाला ग्रहण यदि ६ मास से हो तो जगत् में क्षेम कल्याण आरोग्य तथा सुभिक्ष आदि शुभ फल हो होवे ।



तेहेरे महिनो से होने का फल—

मासि त्रयोदशे दृश्यो चन्द्रार्को ग्रहणं गतौ ।

छत्राण्यनेकानि तदा भज्यन्ते नृपतिक्षय ॥ २३० ॥

कालः शोकावह पुंसां देशाऽनेकविनाशनः ।

स्वचक्र परचक्रैश्च विनश्यति बहुमनाः ॥ २३१ ॥

सूर्य वा चन्द्रमा का ग्रहण प्रथम के ग्रहण से आगे १३ वें महीने में हो तो कई देशों में उपद्रव, अपने राज्य की वा शत्रु की सेना से प्रजा को कष्ट, और राजाओं की मृत्यु अधिक होवे ।

अठारह महिनो से होने का फल—

पदा त्वष्टादशे मासि राहुः सोममुपक्रमेत् ।

रसक्षयो व्याधिभयं विनाशः फलपुष्पयोः ॥ २३२ ॥

सूर्य वा चन्द्र मा का ग्रहण १८ वें महीने में हो तो घृत तेल गुड़ खांड सहन आदि रसों का नाश, फल तथा पुष्पों की हानी और रोगों का उपद्रव होवे ।

चन्द्रमा का ५ । ११ घ सूर्य का १७ महिनो से होने का फल—

चन्द्रे पञ्चममासे तु मासे त्वेकादशे थवा ।

सप्तदशे वा सूर्यस्य ग्रहणं भुज्जयायतत् ॥ २३३ ॥

चन्द्रमा के प्रथम ग्रहण से आगे होनेवाला ग्रहण ५ वें वा ११ वें महीने में हो ऐसही सूर्य का ग्रहण १७ वें महीने में हो नौ जगत् में निश्चय दुर्भिक्ष—अकाल का भय होवे ।

चन्द्रमा का ५ वर्षों और सूर्य का १२ वर्षों पीछे होने का फल—

पञ्चसंवत्सरं घोरं चन्द्रस्य ग्रहणं परम् ।

विग्रहं च परं विन्ध्यात्मूर्यद्वादश वार्षिकम् ॥ २३४ ॥

चन्द्रमा के प्रथम ग्रहण से आगे का ग्रहण यदि ५ वर्षों ( ६० महिनो ) पीछे होवे ऐमे ही सूर्य का ग्रहण १२ वर्षों ( १४४ महिनो )

पीछे होवे तो जगत् में युद्ध महामारि आदि अनेक प्रकार के महान् घोर उपद्रव होवे ।

एक मास में दो ग्रहण होने का फल—

यद्यैकमासे ग्रहणं भवेच्च शशिशूर्ययो ।

राजयुद्धं तदा ज्ञेयं क्षयं याति वसुंधरा ॥ २३५ ॥

एक ही महीने में चन्द्रमा और सूर्य का—दोनों ग्रहण हो जावे तो राजाओं के युद्ध, चोरों का उपद्रव, पाप कर्मों की वृद्धि, माधुओं को पीड़ा और जगत् में अनेक प्रकार का श्रेय होवे ।

एक पक्ष में दो ग्रहण होने का फल—

एक पक्ष में भङ्गुली दोष ग्रहण हुवन्त ।

महि डोले छत्र पडे आई शाख गमन्त ॥ २३६ ॥

कदाचित् उत्पन्न वशसे एक ही पक्ष में दो ग्रहण हो जावे तो जगत् में भय, राजाओं को कष्ट और सेतियों का नाश होवे ।

चन्द्र ग्रहण के एक पक्ष पीछे सूर्य ग्रहण होने का फल—

सोम ग्रहे निवृत्ते पक्षान्ते यदि भवेद्ग्रहोर्कस्य ।

तत्रानयः प्रजाना दम्परयोर्वैरमन्योन्यम् ॥ २३७ ॥

चन्द्रमा के ग्रहण के एक पक्ष पीछे सूर्य का ग्रहण हो तो जगत् में अनेक प्रकार के रोगों का उपद्रव तथा स्त्री पुरुषों के परस्पर में वैर होवे ।

सूर्य ग्रहण के एक पक्ष पीछे चन्द्र ग्रहण होने का फल—

रविग्रहाच्च पक्षान्ते यदि चन्द्रग्रहो भवेत् ।

तदा दर्शनिनो पूजा धर्म वृद्धिर्महोदयः ॥ २३८ ॥

सूर्य के ग्रहण के एक पक्ष पीछे चन्द्रमा का ग्रहण हो तो यज्ञों की वृद्धिमाननीय पुरुषों का सत्कार धर्म का प्रचार और जगत् में आनन्द होवे ।

सूर्य चन्द्र और फिर सूर्य ग्रहण होने का फल—

रवि ग्रहणं प्रथमं कुर्यात् चन्द्र ग्रहण रविपुनः ।

तदा च पण्डका योगं रुण्ड मुण्डा च मेदिनि ॥ २३९ ॥

प्रथम तो सूर्य ग्रहण, फिर चन्द्रमा का ग्रहण और उस के पीछे फिर सूर्य का ग्रहण—ऐसे ३ ग्रहण कभी भी हो तो अनेक प्रकार के उपद्रवों से जगत् का नाश होवे।

**अतिवेला ग्रहण फल—**

अतिवेला गतं पर्व फलं सस्य विनाशनम् ।

मध्यछत्रं विनश्येत मध्यदेश उपद्रवः ॥ २४० ॥

ग्रहण होने का जो समय गणित से निश्चय किया है उस समय पर न होकर उस से पीछे हो तो वह अति वेला ग्रहण कहलाता है। ऐसा ग्रहण कभी होवे तो फलों का तथा खेतियों का नाश, मध्य देश के राजा का छेश तथा मध्य देश के लोगों को उपद्रवों से कष्ट होवे।

**हीन वेला ग्रहण फल—**

वेलाहीनं यदा पर्व शस्त्रकोप भयंकरः ।

स्त्रीणां च स्रवते गर्भो महाराज्ञां नुविग्रहः ॥ २४१ ॥

इसी प्रकार गणित से निश्चय किये हुवे समय से पहिले ही ग्रहण हो जावे तो वह हीन वेला ग्रहण कहलाता है। ऐसा ग्रहण कभी हो तो शस्त्रों का भय, महाराजा को विग्रह और स्त्रियों के गर्भपान होवे।

**अति वेला हीन वेला ग्रहण होने में शंका—**

हीनातिरिक्तकाले फलं मया उक्तं पूर्वशास्त्र दृष्टत्वात् ।

स्फुट गणितविदां काल कदाचिदपि नान्यथा भवति ॥ २४२ ॥

ग्रहण के अति वेला और हीन वेला का फल प्राचीन ग्रन्थों में लिखा है किन्तु बराहमिस्रचार्य इस पर शंका करते हैं कि जिसकी गणित सच्ची होगी उस के निश्चय किये हुवे समय से आगे वा पीछे ग्रहण कदापी नहीं हो सकता।

अति वेला हीन वेला की शंका का समाधान—

पूर्वाह्ने वा पराह्ने वा वेलाहीनं तदुच्यते ।

मध्याने अति वेलास्यात् त्रयोवेला गुणाः फलम् ॥ २४१ ॥

किसी ग्रन्थकारने मध्यान से वा मध्य रात्रि से पहिले होने वाले ग्रहण को तो हीन केल्य और मध्यान वा मध्य रात्रि में होनेवाले ग्रहण को अति वेला मानकर बराह मिहिराचार्य की उपरोक्त शंका का समाधान करा है।

### उत्पात फल प्रकरण ।

मुक्ते सप्ताहान्तः पांशुनिपातोऽन्नसङ्क्षयं कुरुते ।

नीहारो रोगभयं भूकम्पः मवरनृपमृत्युम् ॥ २४४ ॥

उल्का मन्त्रिविनाशं नानावर्णा घनाश्च भयमतुलम् ।

स्तनितं गर्भविनाशं विद्युन्नृपदधिः परिपीडाम् ॥ २४५ ॥

परिवेपो रुक्षीडां दिग्दाहो नृपभयं च सांनिभयम् ।

रुक्षो वायुः प्रबलश्चौरसमुत्थं भयं धत्ते ॥ २४६ ॥

निघातः सूरचापं दण्डश्च क्षुब्धयं सपरचक्रम् ।

ग्रहयुद्धे नृपमुद्धं केतुश्च तदेव सन्दृष्टः ॥ २४७ ॥

ग्रहण का मोक्ष होने के बाद ■ दिन के भीतर २ आगे लिखे हुये निमित्तों के होने से प्रत्येक का पृथक् २ अशुभ फल होता है जैसे आंधी आवे तो अन्न का क्षय, घूहर पड़े तो रोगों का उपद्रव, भूकम्प हो तो श्रेष्ठ राजा को क्लेश, उल्का गिरे ( नानावर्ण के तारा टूटे ) तो राज्य मन्त्रि का नाश, अनेकवर्ण के बादल हो तो बहुत भय, मेघ गाने तो मेघ के गर्भों का नाश, विजलि चमके तो राजा का नया सर्प शूकर आदि दोनों वाले जन्तुओं का भय, परिवेप ( सूर्य चन्द्र के कुण्डल ) हो तो रोगों की पीड़ा, दिग्दाह हो ( चारों ओर बहुत तेजस्वी सन्ध्या फूले ) तो राजा का

तथा अग्नि का भय, रूक्ष वायु जोर में चले तो प्रबल चौरों का उपद्रव, निर्यात ( बिना बादल गाजे ) तथा ईन्द्र धनुष्य अथवा दंड का बिन्ह हो तो दुर्भिक्ष का भय तथा पराये राजा की सेना आने का उपद्रव और ग्रह युद्ध हो ( भौमादि ज्ञानि पर्यन्त ग्रहों में से कोई २ ग्रह आकाश में बहुत भजीक आवे ) अथवा केतुका उदय हो ( धर्मकेतु वा चौटी वाला तारा दीप्ति ) तो राजाओं के परम्पर युद्ध होवे।

अधिकृतसलिलनिपातेः मत्तादान्तः सुभिन्नमात्रेऽप्यम् ।

यच्चाद्युभं ग्रहणं तत्सर्वं नाशमुपयाति ॥ २४८ ॥

परन्तु ७ सात दिन के भीतर २ यदि पानी वर्ष जाय तो उपरोक्त निमित्तों का तथा ग्रहण सम्बन्धी अन्य भी सम्पूर्ण अशुभ फलों का नाश हो कर जगत में सुभिन्न हो जावे ।

## ग्रहण समय बादल वर्षादि ज्ञान प्रकरण ।

नवांश वशा सं वर्षादि निर्णय—

रविमौमनवांशे तु निरभ्रं ग्रसमादिशेत् ।

बुध सौरिनवांशे तु मलिनं शुद्रवर्षणम् ॥ २४९ ॥

गुरोरंशकमासाद्य दृश्यते सबलाहकः ।

शशिशुक्रनवांशे तु भावद् काले महाजलम् ॥ २५० ॥

अन्यत्राव्यक्तभूतौ तौ दृश्यते छादिताम्बरौ ।

ग्रहण सूर्य वा मंगल के नवांश में हो तो ग्रहण के समय बादल नहीं, बुध वा शनि के नवांश में हो तो बादल तथा थोड़ी वर्षा, गुरु के नवांश में हो तो बहुत बादल, और चन्द्र वा शुक्र के नवांश में हो और उस समय वर्षा काल हो तब तो बहुत वर्षा और अन्य काल हो तो आ-काम बादलों में दृक आवे इतने बादल होवे।

निमित्तों द्वारा वर्षा आदि निर्णय—

यास्मिन्यक्षे तपनराशिनोः सौहेके यावमर्द-  
स्तत्रापृथ्वां ग्रहणसमयेन्वेषणीय पुरैवः ।  
दृश्यादृश्या यदि जलधरैर्यद्यदृश्याविनेन्दू  
छायाछन्नौभवत इदत्रो पर्वकालेपि तद्वत् ॥ २५१ ॥

जिस पक्ष में जिस समय ग्रहण होनेवाला हो उस पक्ष की अष्टमी को उसी समय अर्थात् सूर्य ग्रहण में तो कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन में और चन्द्र ग्रहण में शुक्ल पक्ष की अष्टमी की रात्रि में ठीक ग्रहण होने के समय पर जो बादल, वर्षा, वा निर्मल आदि जैसे निमित्त होंगे ठीक वैसेही निमित्त आगे ग्रहण होने के समय भी होंगे ऐसा जाने ।



**मनुष्यादि को जन्म कर्मादि नक्षत्र फल प्रकरण ।**

जन्म कर्मादि नक्षत्र निर्णय—

जन्मर्क्षमाद्यं दशमं च कर्म संघातिकं पौडशमृक्षमाद्यात् ।  
अष्टादशं वै समुदायसंज्ञं भवेत्त्रयोविंशतिकं विनाशम् ॥ २५२ ॥  
यत्पञ्चविंशं खलुमानसं च पटर्ष एवं मनुजस्तु सर्वः ।  
विश्वंभरेशो नवमः स्वजाति देशाभिपेकोद्भवमैः मदिष्टम् ॥ २५३ ॥

प्रथम तो जन्म नक्षत्र, जन्म नक्षत्र से १० वा कर्म, १६ वा संघा-  
निक, १८ वा समुदायक, २३ वा विनाश, और २५ वा मानस—ये छनत्र  
मनुष्य मात्रक हैं और राजाओं के ज्ञानि, देश और राज्याभिपेके ये तीन  
नक्षत्र अधिक होने में न नक्षत्र माने हैं ।

जन्म कर्मादि नक्षत्र पर ग्रहण होने का फल—

जन्ममे प्रतिहते तनुपीडा कर्मणा फलहातिर्दशमर्षे ।  
पौडशे भवति बान्धवपीडाष्टादशे तनुवृतां घनहानि ॥ २५४ ॥

भाणिनाममुहृतिश्च विनाशे मानमे विकलतामनसः स्मात् ।

जातिभे भवतिगोत्रविनाशो देशभे सकलदेशविनाश ॥ २५५ ॥

प्रपीडिते ससभिपेकधिष्य भवेन्नृपाणां तनु देशपीडा ।

घोरापि पीडा प्रशमं प्रयाति स्नानैर्य तस्तानि ततोभिघास्ये ॥ २५६ ॥

ग्रहण निम मनु के जन्म नक्षत्र पर हो उस मनुष्य के शरीर को पीडा, कर्म नक्षत्र पर हो तो कर्म में हानी, समुदाय नक्षत्र पर हो तो कुटुम्बियों को पीडा, विनाश नक्षत्र पर हो तो मित्रों का नाश और मानम नक्षत्र पर हो तो मन में विकल्पना होवे । और राजाओं के जाति के नक्षत्र पर हो तो गोत्र वालों को पीडा, देश के नक्षत्र पर हो तो देश का नाश और राज्याभिष के नक्षत्र पर हो तो राजा के शरीर को तथा देश को महान् पीडा होवे । परन्तु इन नक्षत्रों की शान्ति कर देने से इन सम्पूर्ण अशुभ फलों का नाश हो जाता है ।

जन्म नक्षत्र फल—

यस्यपट्जन्मनक्षत्रे गृह्यते शशिश भास्करो ।

तस्य पुंसः प्रजायन्ते दुःखशोकाप मृत्यवः ॥ २५७ ॥

ग्रहण निम के जन्म नक्षत्र पर हो उमको दू ख, शोक, तथा अप मृत्यु का भय होवे ।

जन्म राशि तथा जन्म लग्न फल—

यस्मिन्नराशौ विलम्बे वा ग्रहणं चन्द्र सूर्ययोः ।

तज्जातानां भवेत्पीडा नराः शान्ति विवर्जिताः ॥ २५८ ॥

ग्रहण जन्मराशि पर वा जन्म लग्न की राशि पर हो तो उम मनुष्य को किसी प्रकार की पीडा होवे परन्तु उम की शान्ति कर देने में फिर पीडा नहीं होवे ।

जन्मादि द्वादश राशि फल—

घातंहानिमथश्रियं जतनभाध्वास्ति च चिन्ताक्रमात्  
सौख्यदारवियोजनं प्रकुरुते ज्यार्थि च मानस्यम् ।

सिद्धि लाभपायमर्कशशिनोः पष्पासमध्येग्रहो

राशिनां समुदीरतेन विधिना ज्ञेयं हि सम्यक्फलम् ॥२५९॥

ग्रहण जन्म राशि पर हो नो घात, दूसरी पर हो तो हानी, तीसरी पर हो तो धन प्राप्ति, चौथी पर हो तो विन्म, पांचवी पर हो तो चिन्ता, छठि पर हो तो सौख्य, सातवीं पर हो तो स्त्री का वियोग, आठवीं पर हो तो रोग, नववीं पर हो तो मान का सय, दशवीं पर हो तो सिद्धि, ग्यारवीं पर हो तो लाभ और बारहवीं पर हो तो हानी ये फल १ महिनो में होवे।

## अनिष्ट ग्रहण शान्ति प्रकरण ।

साधारण शान्ति—

सिद्धार्थकुष्ठ रजनीद्वयलोध्रमुस्ता

लाजानकैः सफलिनीमुरामांसि युक्ताः ।

ज्ञानं हितं ग्रहणदोष विनाशनाय

सर्वेग्रहा रविमुखा शुभदा भवन्ति ॥ २६० ॥

अनिष्ट ग्रहण की शान्ति के लिये सरसों, कूठ, हलदी, शरु हलदी, लोद, लाजा, मफली, और मुरामांसी—इन औषधियों को जल में डालकर उस जल से स्नान करने से ग्रहण के अनिष्ट कारक अशुभ फल का नाश हो कर सूर्यादि सम्पूर्ण ग्रह शुभ फल दायक हो जाते है । शान्ति की विशेष विधि ग्रहण पुण्य कण्ड दर्पण नामक भाग में लिखेग ।



ग्रहण श्रवण फल—

शृण्वन्ति ये षट्गतं ग्रहणं रवीन्दो—

भेदैरनेकविपुलै रूपपन्नमत्र ।

ते प्राप्नुवन्ति हरमस्तक सङ्गपूत

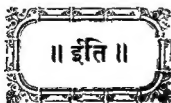
गङ्गावगाहन फलं विपुलं च लक्ष्मी ॥ २६१ ॥

पञ्चाङ्ग में लिखे हुवे ग्रहण सम्बन्धी नाना प्रकार के भेदों सहित  
लों का विधान श्रवण करने से गङ्गा में स्नान करने के समान फल प्राप्त  
ता है और ग्रहण के निमित्त मे जगत् में होने वाली सुवृष्टि, अनावृष्टि,  
भिक्ष, दुर्मिक्ष, तथा हरएक वस्तु की तेजी मन्दी आदि फेरफार को प  
हले से जानकर व्यापार द्वारा बहुत से धन की प्राप्ति भी हो सकती है ।



इति श्री मारवाड देशस्य जोधपुर राज्यान्तर गत पाली नगर नि  
शी पुष्करणा ज्ञानीय व्यासपदवी समलङ्कृत श्रीमन्महीधर तनय नाना-  
शास्त्र विचारणे मदा मग्न हृदय, ज्योतिर्विद् वरिष्ठ 'प्राचीन ज्योतिः शास्त्र  
मी', 'दैवज्ञ भूषण', 'ज्योतिष रत्न', आदि पाण्डित मीठालाल व्यास स-  
हीन "बृहदर्थ्य मार्ण्ड" नाम्नो महतो ग्रन्थादुद्धृत 'ग्रहण निबन्ध'  
नामक चतुर्थे अंकस्य 'ग्रहण फल दर्पण' नामक (१) भाग आर्य भाषा टीका  
हित सम्पूर्णम् ॥

20492



## हमारे बहा की पुस्तकें ।

---

### वृष्टि प्रबोध ( भारतका वायुशास्त्र ) ।

प्राचीन वृष्टि विद्या का भण्डार और सुभिक्ष दुर्भिक्ष को पहिले से जान लेने का सहज उपाय । प्रथम बार की छपी सब पुस्तकें बिक गई । अब दूसरी बार पहिलेसेभी विशेष उपयोगी उपदेशों सहित छापी है । मूल्य वही रु. १।) बी. पी. से १।३)

---

### संक्रान्ति प्रकाश ।

इस में सूर्य की १२ संक्रान्तियों का फलादेश बहुत विस्तार में लिखा है जिससे जगन्का शुभाशुभ फल तथा धान्य घृत गुड़ वस्त्र धातु आदि हरएक वस्तु की तेजी मंदीं ज्ञात हो जाती है । ऐसी उपयोगी पुस्तक हरएक ज्योतिषी तथा व्यापारी को पास रखनी चाहिये । भाषा टीका सहित मूल्य रु. १) पोस्टेज बी. पी. माफ ।

---

### सिद्धान्त सार ( पद्यपञ्चाशिका )

जन्म पत्रिका का फल देखने में परम उपयोगी होने से पहिली बार की छपी सब बिक गई । तब दूसरी बार अधिक उपयोगी बनाकर छापी गई थी पर इस की भी अब थोड़ी पुस्तकें रह गई है मूल्य २) पोस्टेज ॥) बी. पी. से ।)

---

## उपश्रुति ( सोई के शकुन ) ।

इस में पुरुष, स्त्री, बालक आदि के शब्द के शकुन पर से सुभिक्ष दुर्भिक्ष तथा हरषक वस्तु की तेजी मन्दी एवं लीलाम के आंक फरक आदि का ज्ञान होने की विधि भाषा टीका सहित है मृत्यु =) पोष्टेज )॥ वी पी. मे ।)



## भवानी वाक्य ( १०० वर्ष की मैकी ) ।

इसमें प्रत्येक वर्ष में होनेवाली वृष्टि अनावृष्टि, सुभिक्ष दुर्भिक्ष आदि तथा धान्य, घृत तैल गुड़, दधियाणा, कपास, रई, सूत, कपडा आदि की तेजी मन्दी लिखि है मृत्यु १) पोष्टेज भाषा ।

पं० भीठालाल व्यास

यावर—रजपूताना ।



# **BHAVAN'S LIBRARY**

This book is valuable and  
**NOT to be ISSUED**  
out of the Library  
without Special Permission